Official Periodical of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA

श्री साई लीला

May-June 2018 ₹ 8/-

मई–जून २०१८ ₹ ८/–

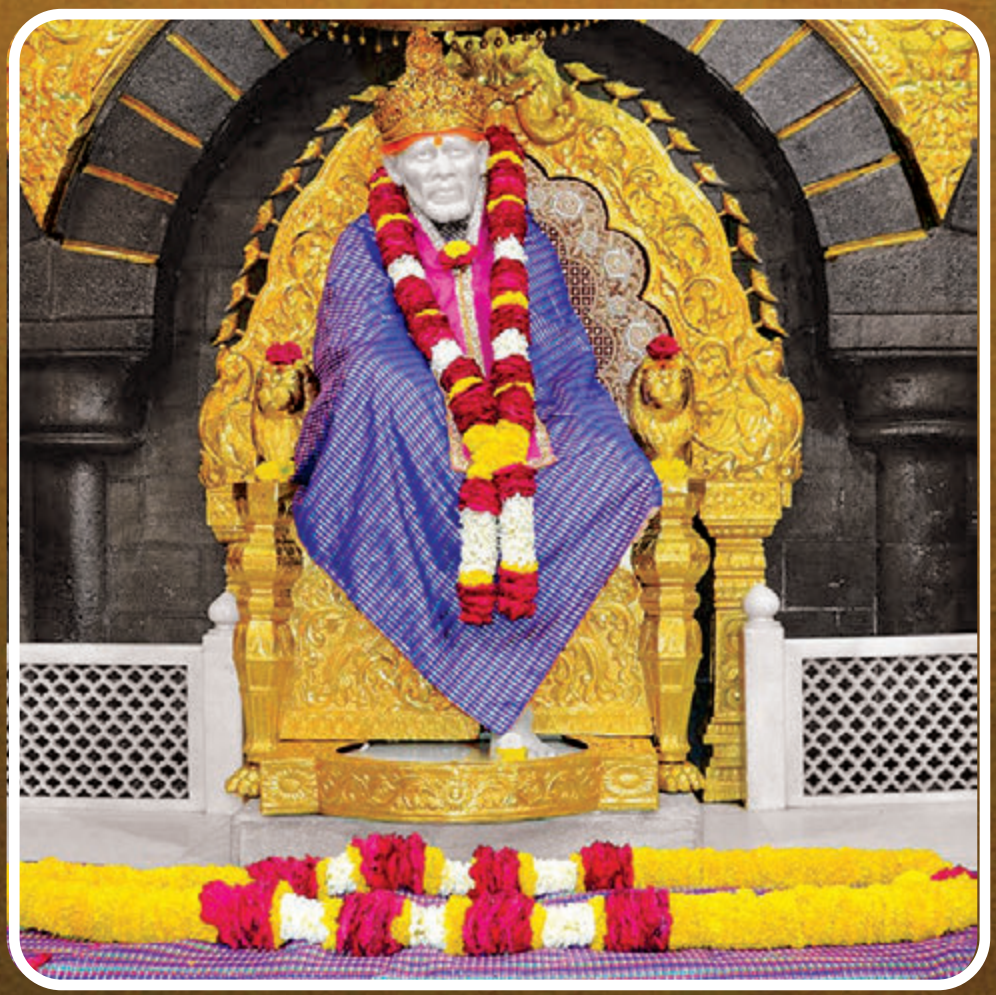

इस अंक में

देवर्षि नारद जयंती पर विशेष लेख

२१ जून, विश्व योग दिन

Shirdi, Ram Navami Festival 2018

श्री रामनवमी उत्सव - २०१८
उत्सव की कुछ ख़ास झलकियाँ

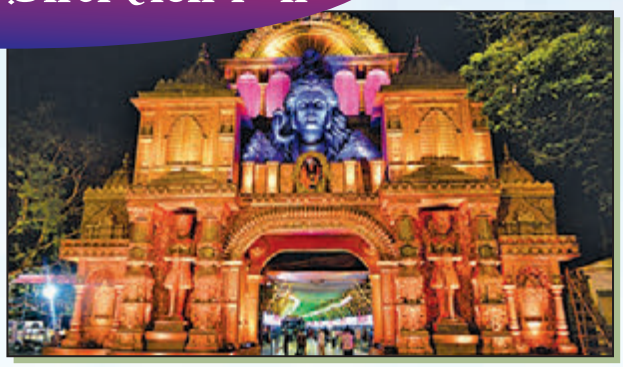

श्री रामनवमी उत्सव के उपलक्ष्य में मंदिर के प्रवेश द्वार के पास श्री द्वारकामाई मंडल, मुम्बई द्वारा रचित नज़्ज़ारा व विद्युत् रोशनी...

श्री रामनवमी उत्सव के मुख्य दिन संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल के हाथों काँवर पूजन...

श्री रामनवमी उत्सव के मुख्य दिन समाधि मंदिर में संस्थान के विश्वस्त श्री प्रताप भोसले व उनकी सुविद्य पत्नी सौ. आश्विनी भोसले के हाथों श्री साईं बाबा की विधिवत् पाद्यपूजा...

श्री रामनवमी उत्सव के मुख्य दिन अखंड पारायण समापन के बाद वीणा (संस्थान के विश्वस्त श्री बिपीनदादा कोल्हे), श्री साईं की तस्वीर (संस्थान के विश्वस्त ॲड. मोहन जयकर व संस्थान के उप ज़िलाधिकारी श्री धनंजय निकम), 'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ (संस्थान की विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा सौ. योगिताताई शेलके) की शोभायात्रा द्वारकामाई से वापस समाधि मंदिर की ओर; साथ में संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त श्री प्रताप भोसले, डॉ. मनिषा कायंदे, उप कार्यकारी अधिकारी डॉ. संदीप आहेर, सौ. सरस्वती भाऊसाहेब वाक्चौरे, अधिकारी, कर्मचारी, साईं भक्त और ग्रामवासी...

SHREE SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI

Management Committee

Dr. Suresh Kashinath Haware (Chairman)
Sri Chandrashekhar Laxmanrao Kadam (Vice Chairman)
Smt. Rubal Prakher Agarwal, I.A.S. (C.E.O.)
Dr. Manisha Shamsunder Kayande (Member)
Sri Pratap Sakhahari Bhosle (Member)
Adv. Mohan Motiram Jaykar (Member)
Sri Bhausaheb Rajaram Wakchaure (Member)
Dr. Rajendra Rajabali Singh (Member)
Sri Ravindra Gajanan Mirlekar (Member)
Sri Bipindada Shankarrao Kolhe (Member)
Sri Amol Gajanan Kirtikar (Member)
Sou. Yogitatai Shelke (Member)

Sri Dhananjay Nikam (Deputy Collector)
Sri Manoj Ghode Patil (Deputy Collector)
Sri Babasaheb Ghorpade (Deputy Executive Officer - in charge)

Internet Edition - URL:http://www.shrisaibabasansthan.org

श्री साई लीला

वर्ष १८ अंक ३

सम्पादक : कार्यकारी अधिकारी
श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी

SHRI SAI LEELA

Year 18 Issue 3

Editor : Executive Officer
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

कार्यकारी सम्पादक : विद्याधर ताठे

Executive Editor : Vidyadhar Tathe

अंतरंग

- सम्पादकीय ४
- देवर्षि नारद : प्रो. ओम प्रकाश सिंह ५
- श्रद्धा सुमन : दास कुम्भेश ७
- समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर : हिंदी अनुवाद : अरुणा विकास नायक ९
- Shirdi News 16

● Cover & inside pages designed by Samir Gore (Siddhivinayak Graphics, Pune) and Prakash Samant (Mumbai) respectively ● **Computerised Typesetting :** Computer Section, Mumbai Office, Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● **Office :** 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 2416 6556 Fax : (022) 2415 0798 E-mail : saidadar@sai.org.in ● **Shirdi Office :** At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● **Annual Subscription : ₹50/-** ● **Subscription for Life : ₹ 1000/-** ● **Annual Subscription for Foreign Subscribers : ₹1000/-** (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● **General Issue : ₹ 8/-** ● **Shri Sai *Punyatithi* Annual Special Issue : ₹15/-** ● Published and printed by the Executive Officer, on behalf of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at Taco Visions Pvt. Ltd., 105 A, B, C, Government Industrial Estate, Charkop, Kandivali (West), Mumbai - 400 067 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

सम्पादकीय

संस्थान प्रकाशित 'साईलीला' (मराठी) द्विमासिक पत्रिका का रामनवमी विशेषांक शिर्डी में रामनवमी उत्सव में (दिनांक २६ मार्च) प्रकाशित हुआ, यह मैं मेरा सौभाग्य समझता हूँ। श्री साईं चरणों में अर्पित यह अक्षर सेवा श्री साईं ने ही मुझे निमित्त बना कर मुझसे करवा ली, इसके प्रति मेरा भाव विनम्रता का ही है।...

लेकिन, कुछ विपरीत तकनीकी–अपरिहार्य स्थिति पैदा होने के कारण साईं भक्त पाठकों को – सदस्यों को यह विशेषांक डाक द्वारा मिलने में देरी हुई।...

संस्थान द्वारा प्रकाशित दूसरी 'श्री साईं लीला' (हिंदी–अंग्रेजी) द्विमासिक पत्रिका के काम में कुछ उलझनें पैदा होने के कारण उसके रामनवमी विशेषांक के प्रकाशन में देरी हुई।...

इसके लिए मैं तहे दिल से क्षमा प्रार्थना करता हूँ।...

अंक समय पर प्रकाशित करने के हमारे प्रयास जारी हैं।...

आशा है कि जल्द ही हम इसमें सफलता पा लेंगे।...

श्री 'साईं लीला' के प्रस्तुत मई–जून अंक में शिर्डी संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के समाचारों को मुख्य स्थान दिया गया है। वर्तमान वर्ष यह श्री साईं बाबा की महासमाधि का शताब्दी वर्ष है। इसलिए शिर्डी में संस्थान द्वारा कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। शिर्डी कार्यक्रमों के चित्रों सहित विवरणात्मक समाचार हमें संस्थान के जनसम्पर्क अधिकारी श्री मोहन यादव और उनके सहयोगियों द्वारा प्राप्त होते हैं। चित्रों सहित इन समाचारों को पढ़ कर लगता है कि हम शिर्डी में ही हैं, ऐसी राय कई साईं भक्त समय–समय पर प्रकट करते हैं।...

दिनांक २१ जून 'आंतरराष्ट्रीय योग दिन' के तौर पर पूरे जगत् में मनाया जाने लगा है।...

योग, आयुर्वेद और अध्यात्म चिंतन यह भारत का प्राचीन ऐश्वर्य है। इसके संबंध में भारत के प्रधानमंत्री ने यू.एन. ओ. के सामने अपने विचार रखें। १७७ देशों की स्वीकृति से २०१६ साल से 'विश्व योग दिन' पूरे जगत् में मनाया जाने लगा है। एक भारतीय के नाते हरएक को इस पर गर्व होना चाहिए।...

इस योग की विशेषता आपको प्रस्तुत अंक में शामिल 'समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर' के विवरण में दिखाई देगी।...

श्री साईं बाबा एक महान योगी थे। इसके कई उदाहरण हमें श्री साईं सत् चरित में पढ़ने को मिलते हैं।...

'श्री साईं लीला' यह सभी साईं भक्तों की द्विमासिक पत्रिका है। इसके लिए सभी साईं भक्तों के साईं संबंधित, अनुभवों पर आधारित लेख सादर आमंत्रित हैं।

विद्याधर ताठे
कार्यकारी सम्पादक
संचार ध्वनि : (०)९८८१९०९७६५
vidyadhartathe@gmail.com

देवर्षि नारद जयंती

देवर्षि नारद

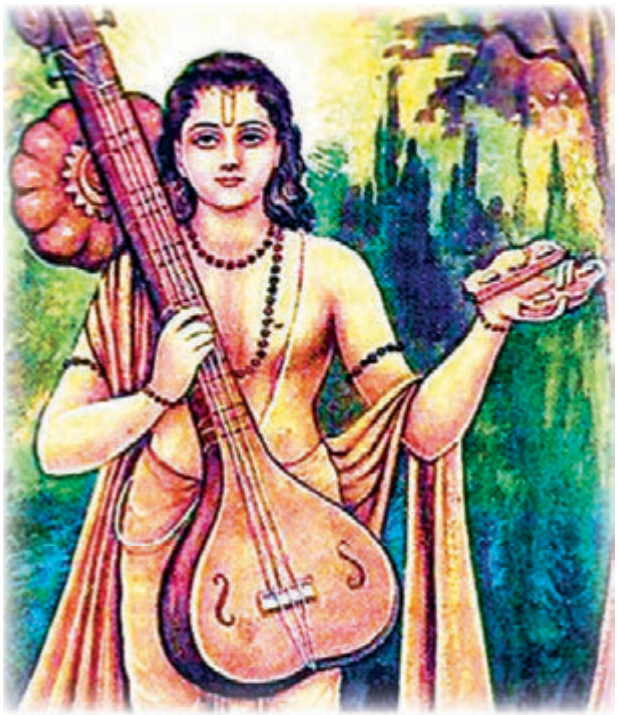

भगवान् विष्णु के श्रेष्ठ भक्त 'नारद' के कई नामों का उल्लेख संस्कृत के ग्रंन्थों में आया है। इन नामों में सर्वाधिक रूप में ज्ञात नारद हैं। नारद को शास्त्रों में देवर्षि नारद, पिशुन आदि नामों से भी सम्बोधित किया गया है। नारद का यह नाम भेद उनके विभिन्न जन्मों तथा उससे जुड़ी कथाओं से है। कहा जाता है कि 'नारद' एक, किन्तु नाम कथा अनेक। नारद वास्तव में भारतीय सनातन साहित्य में वर्णित एवं प्रसिद्ध ऋषि तथा सूचना प्रेषक हैं। सनातन परम्परा में ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के पश्चात् 'नारद' का संदर्भ अधिक है। नारद जी सदा त्रैलोक की मंगलकामना के साथ भ्रमण करते हैं। इस भ्रमण में वीणा एवं हरिगुणगान उनके साथ निरंतर रहते हैं। सबकी ख़बर तथा सब पर नज़र और आवश्यकता के अनुसार सूचना देना तथा प्राप्त सूचना को फैलाना नारद जी का कार्य है।

पुराणों में महाकाव्य–रामायण एवं महाभारत में नारद का उल्लेख है। एक तरह से नारद पुराण कथाओं के विस्तार तथा होनी और अनहोनी की सूचना के विस्तार का कार्य नारद ने किया। नारद ने स्वयं के लिए नहीं, वरन् चराचर सृष्टि की रक्षा के लिए कार्य किया। नारद का कार्य सदा लोकहित से जुड़ा रहा। नारद एक, पर नाम और गुण अनेक हैं। नारद श्री हरि विष्णु के भक्त, प्रसिद्ध संगीतकार, वीणा जैसे वाद्य यंत्र के निर्माता, ज्योतिष के प्रसिद्ध ज्ञाता, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों में निरंतर भ्रमणशील, अमर, ब्रह्मा के मानसपुत्र आदि विशेषताएँ सिर्फ़ नारद पर ही लागू होती हैं। इतना ही नहीं, नारद तपस्वी, त्यागी एवं योगी भी हैं। कई ग्रन्थों के रचनाकार हैं। स्मृतिकारों में भी नारद का नाम प्रसिद्ध है। 'नारदस्मृति' देवर्षि नारद प्रणीत है।

नारद की व्यापकता का अनुमान हम इस प्रकार कर सकते हैं। नारद का उल्लेख वैदिक शास्त्रों के साथ–साथ पौराणिक, स्मृति, रामायण, महाभारत, श्री रामचरितमानस के साथ–साथ भारतीय लोकमानस में भी है। 'नारद' नाम भारतीय समाज में एक रूढ़ि के रूप में विद्यमान है। 'नारद' नाम के उच्चारण मात्र से ही आचार एवं व्यवहार की सूचना सहज रूप में सम्प्रेषित होती है। वास्तव में नाम और नाम का रूढ़िगत होना भिन्न–भिन्न है। कोई नाम किसी व्यक्ति का हो सकता है; लेकिन नाम का रूढ़ि के रूप में विद्यमान होना लम्बे अतीत एवं गुण–अवगुण से जुड़ा होता है। रूढ़िगत नाम अच्छे एवं बुरे दोनों ही प्रकार के व्यवहारों के सूचक होते हैं। भारतीय लोकव्यवहार में प्रचलित रूढ़िगत नामों में 'हरिश्चंद्र' लोक में 'सत्यवादी' के पर्याय हैं। 'बृहस्पति' – ज्ञान के पर्याय हैं। 'कर्ण' – दान के पर्याय हैं। 'इन्द्र' – भोगवादी एवं सत्तावाद के पर्याय हैं। 'भरत' – त्याग के पर्याय हैं। 'श्रवण कुमार' – मातृ–पितृ भक्त के रूप में प्रसिद्ध हैं। 'ध्रुव' – दृढ़ निश्चय के पर्याय हैं। 'नारद' – सूचना देने के पर्याय हैं। इस सूचना व्यवहार के कारण 'नारद' को 'कलह उत्पन्न' कराने जैसा भाव लोक में है। इसी के साथ विचारशील एवं 'ख़बर' रखने वाला भाव भी 'नारद' नाम के साथ विद्यमान है। सद् नामों की इस रूढ़ि के साथ असद् नामों की रूढ़ि भी है। जैसे, रावण – क्रूर अहंकारी, कंस – हिंसक एवं स्वार्थी, बिभीषण – घर का भेदी, धृतराष्ट्र – पुत्रमोह में अंधा, दुर्योधन – दम्भी रूप में प्रसिद्ध है।

इन पुरुष पात्रों के साथ और असद् रूप में महिला पात्रों का भी नाम रूढ़ि रूप में है। जैसे, 'सावित्री' – पतिव्रता एवं श्रेष्ठ नारी रूप में, कौसल्या – त्यागमूर्ति, द्रौपदी – पतिपारायण एवं पारिवारिक गृहिणी, विद्योत्मा – विदुषी के रूप में, इसके विपरीत, ताड़का – उत्पाती, सूपर्णखा – कुलनाशिनी, मंथरा – झगड़ा लगाने वाली, कैकेयी – स्वार्थी एवं छुद्र रूप में, कुबरी – ईर्ष्यालु नारी के रूप में लोक में विद्यमान हैं।

उक्त वर्णित प्रमुख रूढ़िगत सद् एवं असद् नामों में असद् नाम किसी भी समाज में स्त्री अथवा पुरुष से नहीं मिलते, सिर्फ़ रूढ़िगत सद् नाम ही समाज के लोग अपनाते हैं। इस कारण, रूढ़िगत 'नाम' जहाँ नाम है, वहीं इसके साथ एक व्यापक इतिहास एवं व्यवहार का भाव छिपा है। उक्त नाम मात्र लेने से उस नाम के साथ छिपा रहस्य प्रकट होता है। इसी कारण, रूढ़िगत नामों का उपयोग स्थायी नामकरण के साथ ही लोकव्यवहार में व्यक्तित्व के संकेत के रूप में भी उपयोग होता है। लोकव्यवहार, आपसी वार्ता आदि में रूढ़िगत नामों का सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप में उपयोग कर समग्र व्यक्तित्व की सूचना का प्रवाह समाज में किया जाता है। इस प्रकार कुछ 'नाम' प्राचीन पुरुषों एवं स्त्रियों के नाम के साथ–साथ अपने कार्य–व्यवहार के कारण व्यवहार–विशेष के पर्याय बन गये हैं। वर्तमान में इसी विशेषता से जाने जाते हैं। इस प्रकार रूढ़िगत नाम लोकविशेषण के साथ–साथ लोकप्रतीक बन गये हैं। इन्हें हम 'पर्यायवाची' संज्ञक नाम भी कह सकते हैं। क्योंकि, इन रूढ़िगत नामों के साथ व्यक्तित्व विशेष का पर्याय जुड़ गया है। इस कारण, रूढ़िगत नाम संज्ञक व्यक्तित्व वाले लोगों के लिए उक्त लोकप्रतीक नाम पर्यायवाची ही हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'नारद' लोकप्रतीक, रूढ़िसंज्ञक एवं सूचना–व्यवहार के प्रेषक के रूप में जाने जाते हैं। इस व्यापक विशेषता वाले नारद के व्यक्तित्व एवं जीवनवृत्त का वर्णन सहज नहीं है। क्योंकि, अतीत से वर्तमान तक निरंतर विद्यमान एवं प्रवाहमान नाम एवं चरित्र के साथ ही अमर होने के कारण भविष्य से भी जुड़े 'नारद' त्रैलोक्यव्यापी, त्रिकालदर्शी एवं त्रिकालव्यापी हैं। सामान्य रूप में व्यक्तित्व एवं जीवनवृत्त का लेखन अतीत तथा कुछ सीमा तक वर्तमान से जुड़ा होता है। अमर होने के कारण 'नारद' का सम्बन्ध 'भविष्य' से भी जुड़ता है। पौराणिक कथाओं में 'नारद' का जो संदर्भ है वह अतीत एवं इतिहास का भाग है। लेकिन, वर्तमान तथा भविष्य में नारद के जीवन का वृत्त का उल्लेख अति दुरूह कार्य है। वैसे भी नारद की समग्रता को समेटना सहज नहीं है। नारद के समग्र संदर्भ को यदि संकलित ही किया जाये, तो वह स्वयं एक बड़ा ग्रन्थ बन जायेगा।

'नारद' नाम एवं व्यक्तित्व की चर्चा भले ही है, लेकिन वर्तमान समय और समाज में 'नारद' पर शोध एवं साहित्यिक लेखन का कार्य नहीं हुआ है। इस कारण, 'नारद' को नये रूपों में परिभाषित करना और भी कठिन कार्य है। 'पत्रकार नारद' के व्यक्तित्व एवं चरित्र का वर्णन वर्तमान में सबसे अधिक प्रासंगिक है। अतीत के 'नारद' एवं पौराणिक नारद की चर्चा 'नारद' के जीवन का अतीत अथवा भूतकालीन संदर्भ है। 'पत्रकार नारद' की चर्चा; 'नारद' की समकालीन उपस्थिति, व्याप्ति, प्रासंगिकता अथवा वर्तमान स्वरूप एवं संदर्भ में है। 'नारद' की पत्रकारिता के मानक एवं मूल्य भावी सूचना एवं सूचना व्यवहार के मानक हैं। इस प्रकार हम 'पत्रकार नारद' की चर्चा करके नारद से जुड़े वर्तमान प्रसंग को प्रस्तुत कर रहे हैं। इस प्रकार 'पत्रकार नारद' वास्तव में नारद का वर्तमान पक्ष है।

'नारद' की जन्मकथा का सम्बन्ध अतीत से है। इसलिए 'नारद' जन्म की चर्चा, जो पौराणिक तथा उपलब्ध है, उसी की चर्चा हमारी सीमा है। अमर एवं त्रैलोक्यवापी 'नारद' वर्तमान में विद्यमान तो हैं, लेकिन हमारे बीच के समाज के मध्य सूचना के लोकव्यवहार के रूप में विद्यमान हैं । इस कारण, 'पत्रकार नारद' की चर्चा पश्चिमी नहीं, वरन् भारतीय सनातन दृष्टि से ही की जा सकती है; क्योंकि पश्चिम के समग्र ज्ञानभंडार में 'नारद' जैसे व्यक्तित्व की न तो उपस्थिति है और न वर्णन ! इतना ही नहीं, त्रिकालदर्शी, अमर, त्रैलोक्यव्यापी एवं त्रैलोक्य के सूचना–स्रोत नारद के समान कोई भी व्यक्तित्व पश्चिम के साहित्य भंडार में नहीं है। ओशो ने भी कहा है कि वर्तमान की पत्रकारिता पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के बोझ से दबी है। इसे बदलने के लिए एक नया आधार चाहिए। इस कारण, वर्तमान की पत्रकारिता को सुधारने के लिए भारतीय दृष्टि आवश्यक है। प्राचीन भारतीय साहित्य में संचार के तत्वों की व्यापक चर्चा वैदिक, पौराणिक रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में है। पत्रकारिता, जो संचार के एक प्रकार जनसंचार का एक लघु भाग है उसके द्वारा लोक के लिए अथवा समाज के लिए सूचना, संग्रह, संपादन एवं भेजने अथवा प्रेषण या प्रसार का कार्य होता है। 'नारद' त्रैलोक्य की सूचना, संग्रह, संपादन अथवा उचित रूपान्तरण एवं सूचना प्रसार के लिए विख्यात हैं। इस कारण, 'नारद' की पत्रकारिता का संदर्भ वर्तमान पत्रकारिता के दोषों के निदान के लिए तथा श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए ज़रूरी है।

प्रत्येक व्यक्ति का उद्भव, व्यक्तित्व जीवन आदि एक क्रम है। ठीक इसी प्रकार नारद का व्यक्तित्व, उद्भव एवं जीवन का एक क्रम है। भारतीय दर्शन आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास करता है। इसी के साथ देवता, चार लाख चौरासी योनियाँ, कर्मवाद, मोक्ष भी भारतीय दर्शन के आधार हैं। बहुद्देश्यवाद, कर्मकाण्ड भी भारतीय दर्शन के भाग हैं। 'नारद' की जीवन

(पृष्ठ ८ पर)

श्रद्धा सुमन

सजदे में साईं, माँगी है यह दुआ;
अपनी समाधि का, हमें बना ले दिया।

जलता रहूँ मैं उम्र भर,
देखूँ तुम्हें यूँ भर नज़र।

साईं हो मौला, सुन ले मेरी सदा...
सजदे में साईं, माँगी है यह दुआ;
अपनी समाधि का, हमें बना ले दिया।

फूल न बनूँ सिंगार का,
न बनूँ किसी के हार का।

चरणों में अपने, साईं हमको बिठा...
सजदे में साईं, माँगी है यह दुआ;
अपनी समाधि का, हमें बना ले दिया।

कब से पड़ी है अहिल्या,
छू ले चरण से कर दया।

नाम साईं राम, तेरा भी तो हुआ...
सजदे में साईं, माँगी है यह दुआ;
अपनी समाधि का, हमें बना ले दिया।

हूँ धूल में भी राह की,
जोहे राह जो आपकी।

चंदन बन जाऊँ, हो जो तेरी दया...
सजदे में साईं, माँगी है यह दुआ;
अपनी समाधि का, हमें बना ले दिया।

दास कुम्भेश बिन माँगे,
पाया इतना क्या माँगे।

धूली चरणों की, दे देकर दे कृपा...
सजदे में साईं, माँगी है यह दुआ;
अपनी समाधि का, हमें बना ले दिया।

***

बरस रहा रस जो शिर्डी में, तीन लोक में नाहीं;
तीन लोक में नाहीं सुख वो, स्वर्ग लोक में नाहीं।

शिर्डी नगरी में आ देखो, समाधि मंदिर में साईं को;
ममता मूरत दया कृपा की, करुणा रस बरसाती।

बरस रहा रस जो शिर्डी में, तीन लोक में नाहीं;
तीन लोक में नाहीं सुख वो, स्वर्ग लोक में नाहीं।

साईं सुगंध कण-कण बसती, श्रद्धा सबुरी सदा महकती;
भींगे भगतों की टोली भी, भक्ति रंग दिन-राती।

बरस रहा रस जो शिर्डी में, तीन लोक में नाहीं;
तीन लोक में नाहीं सुख वो, स्वर्ग लोक में नाहीं।

चार आरती हो रोज़ाना, दृश्य सुहाना दिखे न आना;
महक अगर लोबान धूप की, सबका मन हरषाती।

बरस रहा रस जो शिर्डी में, तीन लोक में नाहीं;
तीन लोक में नाहीं सुख वो, स्वर्ग लोक में नाहीं।

नीम वृक्ष अमृत बरसाये, अल्ला मालिक हवा सुनाये;
राह जोहती मसजिद माई, धूनी नाम सुमिरिती।

बरस रहा रस जो शिर्डी में, तीन लोक में नाहीं;
तीन लोक में नाहीं सुख वो, स्वर्ग लोक में नाहीं।

गीत भजन गुण मंदिर में हों, मुग्ध मगन मन भक्तों के हों;
देखो साईं लीला होती, अब भी शिर्डी माहीं।

बरस रहा रस जो शिर्डी में, तीन लोक में नाहीं;
तीन लोक में नाहीं सुख वो, स्वर्ग लोक में नाहीं।

***

छोड़ सहारे झूठे सारे शिर्डी आओ,
ढोल बजाते गाते जय जय साईं आओ...

संकट चाहे जितना भी हो मत घबराना,
साईं बाबा की पनाह में शिर्डी आना;
भेंट चढ़ाने श्रद्धा-सबुरी लेकर आओ,
ज्योत जगाये प्रेम भक्ति की मन में आओ।

छोड़ सहारे झूठे सारे शिर्डी आओ,
ढोल बजाते गाते जय जय साईं आओ...

हो न कहीं ऐसा कोई तुमको भटकाये,
ख़ुद को बता अवतार साईं का भरमाये;
पाँव तुम्हारे डगर भूल ना जायें देखो,
राह सही सीधी शिर्डी की भटक न जाओ।

छोड़ सहारे झूठे सारे शिर्डी आओ,
ढोल बजाते गाते जय जय साईं आओ...

बसे चावड़ी में शिर्डी की अब भी साईं,
रूह बसी है समाधि मंदिर मसजिद माई;
सुलग रही है धूनी अब भी आकर देखो,
उदी चमत्कारी है उसकी लेकर जाओ।

छोड़ सहारे झूठे सारे शिर्डी आओ,
ढोल बजाते गाते जय जय साईं आओ...

शिर्डी नगरी प्यारी सबके मन को भाये,
एक बार आये जो बार-बार वो आये;
मिलें सभी सुख एक धाम तो काहे भटको,
हुई मुरादें सबकी पूरी इस दर आओ।

छोड़ सहारे झूठे सारे शिर्डी आओ,
ढोल बजाते गाते जय जय साईं आओ...

***

परदा भरम का हटा कर जो देखा,
हर जान जर्रे में साईं को देखा।

पानी से जिसने दिये थे जलाये,
दिखाये वो अब भी चमत्कार देखा।

परदा भरम का हटा कर जो देखा,
हर जान जर्रे में साईं को देखा।

अल्लाह मालिक दुआ दे जो सबको,
हरिनाम भजता वो भगवान् देखा।

परदा भरम का हटा कर जो देखा,
हर जान जर्रे में साईं को देखा।

मसजिद में धूनी रमाये फ़क़ीरा,
भारी अजूबा यह शिर्डी में देखा।

परदा भरम का हटा कर जो देखा,
हर जान जर्रे में साईं को देखा।

चढ़ा सीढ़ियाँ जो साईं के दर की,
हर हाल उसको सँवरते ही देखा।

परदा भरम का हटा कर जो देखा,
हर जान जर्रे में साईं को देखा।

***

ऐसा तराना सुना गया साईं, सारी दुनिया में छा गया साईं।

बुझ न पायेगी लाख बुझाये भी,
जो प्रेम धूनी जला गया साईं।

ऐसा तराना सुना गया साईं, सारी दुनिया में छा गया साईं।

राग नफ़रत का अब न यहाँ छेड़ो,
सुर मुहब्बत का लगा गया साईं।

ऐसा तराना सुना गया साईं, सारी दुनिया में छा गया साईं।

फ़र्क़ करते हैं रब के बंदों में,
जवाब उनको भी दे गया साईं।

ऐसा तराना सुना गया साईं, सारी दुनिया में छा गया साईं।

धर्म गुरुओं से जाके ये कह दो,
भेद मालिक का बता गया साईं।

ऐसा तराना सुना गया साईं, सारी दुनिया में छा गया साईं।

औलिया कोई रब कहे कुम्भेश,
दास्ताने दर्द नाम है साईं।

ऐसा तराना सुना गया साईं, सारी दुनिया में छा गया साईं।

न हो उदास जो ली समाधि उसने,
आवाज़ अब भी सुनता है साईं

ऐसा तराना सुना गया साईं, सारी दुनिया में छा गया साईं।

***

– दास कुम्भेश –
बी-२०३, जूही, सेक्टर २, वसंत नगरी, वसई (पूर्व),
पालघर - ४०१ २०५, महाराष्ट्र. ई-मेल : kumbhesh9@gmail.com
दूरभाष : (०२५०)२४६०१०० संचार ध्वनि : (०)९८९०२८७८२२

❍❍❍

(पृष्ठ ६ से)

कथा भारतीय दर्शन के अनुरूप है। ब्रह्मा के मानस पुत्र होने के साथ ही अपने कृत कर्म, व्यवहार तथा उसके परिणाम स्वरूप प्राप्त शाप के परिणाम स्वरूप विभिन्न जन्मों एवं योनियों में भी भटकना पड़ा। तपस्या आदि के कारण अमर एवं देवर्षि भी बने। अपने पवित्र भाव, किन्तु पिता एवं लोक के अनुरूप नहीं होने के कारण शापित होकर ब्रह्मा के मानस पुत्र से नर योनि को प्राप्त हुए। किन्तु, अपनी तपस्या और भक्ति के बल पर पुनः देवर्षि, अमर एवं त्रैलोक्य में विद्यमानता की प्राप्ति कर सके।

शापजनित कर्मफल के कारण विभिन्न जन्मों में भटकने के कारण 'पत्रकार देवर्षि नारद' का जन्म वृत्तांत अथवा जन्मकथा अलग-अलग लगती हैं। ब्रह्मपुत्र नारद ने ही जन्म लिया। इस कारण, नारदजन्म से जुड़ी प्रत्येक कथा ब्रह्मपुत्र, देवर्षि, पत्रकार एवं अमर आदि सम्बोधन वाले नारद की ही है। इस कारण, हम कह सकते हैं कि 'नारद एक और जन्मकथा अनेक'।

– प्रो. ओम प्रकाश सिंह
(म. गांधी काशी विद्यापीठ)

❍❍❍

समर्पण ध्यानयोग महा-शिविर में दिखाई दी अत्यन्त उत्साह भरी रुचि...

श्री साईं बाबा समाधि शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी तथा योग प्रभा भारती (सेवा संस्था) ट्रस्ट, मुम्बई की ओर से सोमवार, दिनांक २३ अप्रैल से सोमवार, दिनांक ३० अप्रैल २०१८ इस कालावधि में शाम ७ से रात ९ बजे तक, शिर्डी में नये श्री साईं प्रसादालय के पास, खेती महामंडल के मैदान में आयोजित किये गए श्री शिवकृपानंद स्वामी जी के मार्गदर्शन में समर्पण ध्यानयोग महा-शिविर का उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री श्री श्रीपाद नाईक के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कदम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, सांसद श्री सदाशिव लोखंडे, विश्वस्त श्री भाऊसाहेब वाक्चौरे, श्री प्रताप भोसले, विश्वस्त तथा शिर्डी नगरपंचायत की अध्यक्षा श्रीमती योगिताताई शेलके, उप ज़िलाधिकारी श्री मनोज घोडे पाटिल, विविध धर्मों के प्रतिनिधि, जंगली महाराज आश्रम के अध्यक्ष श्री नंदकुमार सूर्यवंशी, योग प्रभा भारती (सेवा संस्था) ट्रस्ट, मुम्बई के श्री अनुराग मोदक, श्री गिरीश बोरकर, २२ देशों से आये ४०० परदेसी तथा भारत देश के १५ राज्यों से आये लगभग ३५ हज़ार साधक इस महा-शिविर में शामिल थे। संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल ने कार्यक्रम की प्रस्तावना की और उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कदम ने आभार प्रकट किया।

इस समय केन्द्रीय मंत्री श्री नाईक ने कहा कि श्री शिवकृपानंद स्वामी जी हिमालय से सामान्य जनता के लिए समर्पण ध्यान रूपी गंगा लेकर आये हैं। आत्मा के मोक्ष प्राप्ति का मार्ग इस ध्यान से मिलता है। जाति-धर्म से परे जीवन का उत्कर्ष इसी माध्यम से हो रहा है। श्री साईं बाबा द्वारा शुरू किया गया मानव कल्याण का कार्य सर्वत्र पहुँचा है। इसी कारण साईं बाबा के मंदिरों का निर्माण पूरे विश्व में हो रहा है। भक्ति मार्ग के जरिए आदमी को इन्सान बनाने की शक्ति निर्माण हुई है। समर्पण ध्यानयोग शिविर के माध्यम से श्री शिवकृपानंद स्वामी जी द्वारा शुरू किया गया कार्य समूचे विश्व में पहुँच रहा है।

संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्री साईं बाबा ने हमें न केवल श्रद्धा और सबूरी का मंत्र दिया, बल्कि ग़रीबों की सेवा करने की सीख दी। श्री साईं बाबा समाधि शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में पूरे वर्ष में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पादुका दर्शन आदि कार्यक्रमों का आयोजन संस्थान द्वारा किया

जा रहा है। आज का समर्पण ध्यानयोग महा-शिविर इसी का ही एक हिस्सा है। सूरत के श्री शिवकृपानंद स्वामी जी के शिविर से मुझे शिर्डी में ध्यानयोग शिविर का आयोजन करने की प्रेरणा मिली। देश में आम आदमी को शांति, सुख, समाधान की आवश्यकता है; अतः समर्पण ध्यानयोग महा-शिविर के माध्यम से आप सभी को यह निश्चित प्राप्त होगा। शिर्डी में शिविर का आयोजन करने के लिए डॉ. हावरे ने श्री शिवकृपानंद स्वामी जी के प्रति आभार प्रकट किया।

सोमवार, दिनांक २३ अप्रैल २०१८ : प्रथम दिन * परिचय

समर्पण ध्यानयोग महा-शिविर में मार्गदर्शन करते हुए श्री शिवकृपानंद स्वामी जी ने कहा कि 'साईं', अर्थात् 'साक्षात् ईश्वर', जो कल भी था, आज भी है और आने वाले कल में भी होगा। जैसे-जैसे मानव सभ्यता विकसित होती गई उसके साथ-साथ विविध उपासना पद्धतियों का उदय हुआ। उन सभी में किये गए उपदेशों से मनुष्य में आंतरिक परिवर्तन न हो सका। हिमालय में स्थित गुरूओं ने इसमें से समर्पण ध्यानयोग संस्कार का मार्ग निकाला, जिसमें बाहर से कोई भी उपदेश नहीं किया जाता; केवल पवित्र संस्कार संक्रमित किये जाते हैं। समर्पण संस्कार से आत्मजागृति होने पर, क्या उचित है और क्या अनुचित है इसका ज्ञान अंदर से ही प्राप्त होता है।

पुस्तकीय ज्ञान परमात्मा की जानकारी दे सकता है; किंतु परमात्मा की अनुभूति नहीं कर दे सकता। जब तक जीवित गुरु से आध्यात्मिक बीज बोया नहीं जाता तब तक आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती। समाधिस्थ गुरु की प्रार्थना कर जीवित गुरु तक पहुँचा जा सकता है। स्वामी जी ने परमात्मा के बारे में साईं का संदेश बताया कि परमात्मा सभी के अंदर है; इसलिए उसे बाहर ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं है। ध्यान यानी जो कार्य हम कर रहे हैं उसे बिना छोड़े केवल परमात्मा को अपने जीवन से जोड़ना है। ''मैं एक पवित्र आत्मा हूँ, मैं एक शुद्ध आत्मा हूँ'' यह मंत्र देकर उन्होंने साधकों से ध्यान करवाया।

मंगलवार, दिनांक २४ अप्रैल २०१८ : दूसरा दिन * मूलाधार चक्र -

समर्पण ध्यानयोग महा-शिविर के दूसरे दिन की शुरुआत सुबह ६.३० बजे शिविर स्थान पर सामूहिक ध्यान तथा योगासनों से हुई। उसके पश्चात् ८ बजे श्री साईं बाबा रुग्णालय और समर्पण मेड़िकल रिसर्च समूह द्वारा वैद्यकीय चिकित्सा शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उसमें ३५० शिविरार्थियों की शर्करा, रक्त चाप तथा मानसिक आदि स्थितियों की जाँच की गई।

शाम ६.१५ बजे समर्पण ध्यानयोग परिवार के कुछ साधकों द्वारा भक्ति भाव से भरे भजन प्रस्तुत किये गए। उसके बाद ७ बजे श्री शिवकृपानंद स्वामी जी के प्रवचन का प्रारम्भ हुआ। स्वामी जी ने कहा कि सर्वप्रथम हमारा चित्त शुद्ध व पवित्र होना ज़रूरी है। हम मलिन चित्त लेकर किसी भी मंदिर में, समाधि स्थल पर या किसी जीवित गुरु के पास जाकर अमृत इकट्ठा करेंगे, तो वह ख़राब ही होने वाला है। जिस समय तुम्हारा चित्त पवित्र होगा उसी समय तुम्हारे भीतर परमात्मा प्रकट होगा। स्वामी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरु की भूमिका शिल्पकार के समान है। जिस प्रकार एक शिल्पकार पत्थर से मूर्ति बनाता है उसी प्रकार गुरु भी प्रत्येक शिष्य के भीतर परमात्मा के अलावा जो भी अनावश्यक है उसे दूर करता है, अतः अंदर का परमात्मा प्रकट होता है।

श्री साईं बाबा तक पहुँचने के लिए एक मासूम बालक बनो, चित्त शुद्ध करो, पवित्र करो। यदि हर इन्सान यह इच्छा रखे, तब आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करना मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। स्वामी जी ने कहा कि आध्यात्मिक प्रगति के लिए मूलाधार चक्र शुद्ध होना अति आवश्यक है और उसके लिए अपनी भूमि के साथ सम्पर्क रखना, बहुत ही फ़ायदेमंद साबित होता है।

उन्होंने ध्यान के बारे में कहा कि समर्पण ध्यान के दो पहिये हैं - नियमित ध्यान और सामूहिक ध्यान। चित्त की शुद्धि के लिए सामूहिक ध्यान करें। सुबह एकांत में नियमित ध्यान करने से आभा मंडल विकसित होता है और सामूहिक ध्यान से चित्त को नियंत्रित किया जा सकता है। सभी को अपने जीवन में कोई ऐसा कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि वह कार्य किसी को दिखाने के लिए नहीं, बल्कि आत्मा को आनंद देने के लिए करना चाहिए; क्योंकि ऐसा कार्य करने से आत्मा सशक्त होती है।

प्रवचन के पश्चात् स्वामी जी ने सभी शिविरार्थियों से ध्यान करवाया। इसके साथ ही शिविर के दूसरे दिन का समापन हुआ। गुरु तत्व, अध्यात्म एवं विज्ञान के विषयों पर आधारित दो प्रदर्शनियों का सभी शिविरार्थियों ने लाभ उठाया।

बुधवार, दिनांक २५ अप्रैल २०१८ : तृतीय दिन * स्वाधिष्ठान चक्र –

समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर के तीसरे दिन की शुरुआत सुबह ६.३० बजे शिविर स्थान पर सामूहिक ध्यान तथा योगासनों से हुई। शाम ६.१५ बजे साधकों द्वारा गाये हुए भजनों से माहौल भक्ति भाव से भर गया।

प्रवचन के प्रारम्भ में राजा जनक का उदाहरण देते हुए श्री शिवकृपानंद स्वामी जी ने संसार में रहते हुए भी आध्यात्मिक प्रगति कैसे कर सकते हैं, इसका मार्गदर्शन किया। सभी के साथ, समाज के साथ, परिवार में रहते हुए भी एकांत में आधा घंटा बैठ कर ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार निरंतर ध्यान के अभ्यास से अपना आभा मंडल धीरे–धीरे विकसित होता है। जिस प्रकार मोबाइल चार्ज़ करके उसे हम दिन भर उपयोग में लाते हैं वैसे ही नियमित आधा घंटा ध्यान करके शरीर रूपी मोबाइल चार्ज़ करना चाहिए। कमल की उपज कीचड़ से होती है, परंतु कीचड़ में रह कर भी कीचड़ का एक भी दाग कमल पर नहीं होता। इससे हमें यह सीखना है कि सबके बीच में रहते हुए भी अलिप्त कैसे रहना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि समाज में रहने वाले लोगों को सभी प्रकार के प्रदूषणों की जानकारी होती है। इन सबमें एक ख़तरनाक प्रदूषण है, जो दिखता नहीं है, किंतु उसे हम महसूस करते हैं, वह है वैचारिक प्रदूषण। इस प्रदूषण की तीव्रता बड़े शहरों में अधिक महसूस होती है। इस प्रदूषण से दुनिया में कई प्रकार के तनाव और भय का वातावरण फैल रहा है। अपने घर को सुरक्षित रखने के लिए घर में नियमित रूप से ध्यान करना चाहिए।

डॉक्टर, रक्षक, वकील और राजनेता ये समाज के चार प्रमुख स्तम्भ हैं। उनके व्यवसाय की वजह से उनके इर्दगिर्द हमेशा एक नकारात्मक माहौल होता है; इसके कारण उनके जीवन में तनाव निर्माण होता है; इसलिए इन लोगों ने ध्यान करना अत्यंत आवश्यक है। ध्यान से उनके इर्दगिर्द सकारात्मक शक्ति का आभा मंडल तैयार होगा, जो उन्हें सुरक्षा प्रदान करेगा। भारत के लोकतंत्र का समर्थन करते हुए स्वामी जी ने यह भी बिनती की कि मतदान अवश्य करें।

गुरुत्व के बारे में उन्होंने कहा कि गुरु के रंग–रूप अलग–अलग हो सकते हैं; किंतु गुरु तत्व एक ही है। गुरु कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि तत्व है। गुरु तत्व चैतन्य का एक प्रवाह है, जो कल था, आज है और आने वाले कल में भी होगा। श्री साईं बाबा के अवतार काल में घटित एक घटना बता कर उन्होंने साईं बाबा के 'सबका मालिक एक' संदेश की सभी को स्मृति दिलाई। स्वामी जी ने परमात्मा एवं धर्म के बारे में कहा कि परमात्मा यानी विश्व–चेतना और धर्म यानी मनुष्य धर्म, आत्म धर्म। अंत

में ध्यान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

गुरुवार, दिनांक २६ अप्रैल २०१८ : दिन चौथा * नाभि चक्र –

समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर के चौथे दिन श्री शिवकृपानंद स्वामी जी ने सद्गुरु, मोक्ष और ध्यान–साधना का महत्व बताते हुए मार्गदर्शन किया। श्री साईं नाथ से आत्मसाक्षात्कार की माँग करने वाले धनिक की कहानी बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि आत्मसाक्षात्कार के लिए सद्गुरु को ही परमात्मा मान कर शरीर भाव को पूर्णत: नज़रअंदाज़ कर समर्पित होना अत्यंत ज़रूरी है। इससे साधकों की सद्गुरु से ग्रहण करने की क्षमता बढ़ती है। सद्गुरु की भूमिका क्षणिक होती है। वे साधक को परमात्मा को पाने की राह दिखाते हैं। अगली साधना साधक को स्वयं करके मोक्ष की प्राप्ति करनी है। साधक को स्वयं सद्गुरु ही अंतर्मुख कर सकते हैं।

जो भावुक स्वभाव के हैं, उन्हें चाहिए कि वे समाधिस्थ गुरु के स्थान पर जाकर आत्मसाक्षात्कार के लिए तहे दिल से प्रार्थना करें। शिर्डी ऐसा ही एक स्थान है। यह मोक्ष की प्राप्ति का महाद्वार है। यहाँ प्रार्थना करने से साधक जीवित सद्गुरु तक पहुँच सकता है तथा आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति कर सकता है। भले ही गुरु के शरीर अलग–अलग हों, किंतु गुरु तत्व एक ही होता है, ऐसा संदेश साईं बाबा लोगों को देते थे।

नाभि चक्र का संबंध तृप्ति एवम् समाधान से है। मनुष्य का नाभि चक्र अगर शुद्ध होगा, तो उसके आध्यात्मिक प्रगति की शुरुआत होती है। पति–पत्नी के बीच, माता–पिता और बच्चों के बीच, वैसे ही भाई–बहनों में संबंध सौहार्द, प्यार के होंगे, तो मनुष्य के आध्यात्मिक प्रगति में कोई रुकावट नहीं आती।

शुक्रवार, दिनांक २७ अप्रैल २०१८ : पाँचवाँ दिन * हृदय चक्र –

समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर के पाँचवें दिन की शुरुआत हमेशा की तरह सुबह ६.३० बजे शिविर स्थान पर ध्यान तथा योगासनों से हुई। शाम के सत्र में श्री साईं बाबा का संदेश समझाते हुए श्री शिवकृपानंद स्वामी जी ने कहा कि साईं बाबा अपने जीवन काल में दक्षिणा के रूप में साधकों का भाव ग्रहण करते थे। भिक्षा माँग कर लाया हुआ अन्न पशु–पक्षियों को प्रसाद के तौर पर देते थे। मिली हुई दक्षिणा से लकड़ी ख़रीद कर धूनी प्रज्वलित करते थे और प्रसाद के तौर पर भक्तों को रक्षा, उदी देते थे। भक्त अलग–अलग समस्या लेकर उनके पास आते थे। लेकिन, उन सभी समस्याओं पर वे एक ही इलाज करते थे, उदी देते थे। संकल्प करके आशीर्वाद के रूप में उदी देते थे। उदी के कारण बहुत चमत्कार हुए हैं। भक्तों की गुणग्राहकता जैसे होगी वैसा ही प्रभाव उदी का होता है।

हृदय चक्र का संबंध भय से है और सबसे बड़ा भय मृत्यु का होता है। मोक्ष यानी मृत्यु है, यह ग़लतफ़हमी है। मोक्ष ध्यान की उच्च अवस्था है। इस अवस्था में जाते ही मृत्यु का भय दूर हो जाता है। समर्पण ध्यानयोग में ध्यान की उच्च स्थिति में शरीर कभी भी छोड़ कर जाया जा सकता है। हृदय चक्र का संबंध अपने माता–पिता से है। उनके अत्याधिक प्यार और बच्चों की ओर निरंतर ध्यान के कारण बच्चों की स्थिति बिगड़ जाती है और वे कमज़ोर पड़ जाते हैं। आपको यदि नकारात्मक विचारों ने घेर लिया, तो सोचिए कि मैं नियमित, सामूहिकता में ध्यान करता हूँ; अतः मेरा कभी भी बुरा नहीं होगा। उसके पश्चात् चैतन्य से भरे माहौल में स्वामी जी ने उपस्थित साधकों से ध्यान करवाया।

शनिवार, दिनांक २८ अप्रैल २०१८ : छठा दिन * विशुद्धि चक्र –

समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर के छठे दिन की शुरुआत हमेशा की तरह सुबह ६.३० बजे शिविर स्थान पर सामूहिक ध्यान और योगासनों से हुई। शाम के सत्र में प्रवचन की शुरुआत श्री शिवकृपानंद स्वामी जी ने श्री साईं बाबा के जीवन काल की एक घटना बता कर की। राहाता और कोपरगाँव के बीच शिर्डी एक छोटासा गाँव, फिर भी यही गाँव साईं बाबा ने अपने कार्य के लिए चुना। कड़ी गर्मी के दिन थे। द्वारकामाई में मरम्मत का काम शुरू हुआ था। सभी मज़दूरों को बड़ी प्यास लगी थी। किंतु, रेत और चूना मिला कर बनाया हुआ मसाला सूक न जाये, इसलिए वे बेचारे उसी स्थिति में काम जारी रखे हुए थे। बाबा जब वहाँ काम की निगरानी करने गये तब मज़दूरों का दर्द उन्होंने जाना। उन्होंने पानी मँगवाया। एक हिंदू भक्त ने मुसलमान द्वारा लाया हुआ पानी पिने के लिए मना किया। बाबा ने हिंदू और मुसलमान दोनों का पानी इकट्ठा कर लिया और मज़दूरों को अपने चिंतन में लाकर पानी पिया। फलस्वरूप सभी मज़दूरों की प्यास बुझ गई। उस समय अंग्रेज शासक हिंदू और मुस्लिमों के बीच झगड़ा लगाने की बरबस कोशिश करते थे। इस प्रकार की विपरीत स्थिति में साईं बाबा ने हिंदू–मुस्लिम समाज को संघटित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

स्वामी जी ने शिर्डी में श्री साईं बाबा का दर्शन किस तरह करना चाहिए इसका उचित मार्गदर्शन किया। दर्शन हमेशा मध्य नाड़ी में रह कर, शांत और संतुलित रह कर करना चाहिए। किसी भी तीर्थस्थान की यात्रा सद्गुरु के साथ करनी चाहिए; क्योंकि सद्गुरु वहाँ की ऊर्जा ग्रहण करते हैं; उससे उनके शिष्यों को अनायास ही वह ऊर्जा प्राप्त होती है। 'सबका मालिक एक' इस एक ही मंत्र या वाक्य से सभी रहस्यों को सुलझाया जा सकता है। इसके अंदर ही सारे कृपाशीर्वाद अंतर्भूत हैं। दुनिया के सभी युद्ध उपासना पद्धति को लेकर ही हो रहे हैं। आने वाला समय और परिस्थिति को जान कर ही यह मंत्र साईं बाबा ने जगत् को दिया है। यदि इस मंत्र को सभी लोग आत्मसात करें, तो निश्चित ही विश्व में शांति बनी रहेगी।

विशुद्धि चक्र का संबंध यश से है। गर्भावस्था में माँ के नकारात्मक विचारों के कारण बच्चे का विशुद्धि चक्र बिगड़ जाता है और वह ज़िंदगी में कामयाबी हासिल नहीं कर सकता। यदि ऐसा होता है, तो उसने अपने प्रयासों को कुछ दिनों तक रोकना चाहिए और ध्यान करके अपनी स्थिति में सुधार लाना चाहिए। साधक की सकारात्मक सामूहिकता उसे असफलता से बाहर खींच ला सकती है, इस बात का ध्यान रखें। यह आप पर निर्भर है कि गुरु सान्निध्य से आप क्या लाभ उठा सकते हैं। सबसे बड़ा फ़ायदा आप अंतर्मुख हो जाते हैं। केवल सद्गुरु ही आपको अंतर्मुख कर सकते हैं। जितने आप अंतर्मुख होंगे, उतना आपका आत्मभाव बढ़ेगा तथा शरीर के प्रति आपका भाव कम होगा। आपकी सारी समस्याएँ शरीर से संबंधित हैं। तत्पश्चात् स्वामी जी ने चैतन्य भरे माहौल में साधकों से ध्यान करवाया।

रविवार, दिनांक २९ अप्रैल २०१८ : सातवाँ दिन * आज्ञा चक्र –

समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर के सातवें दिन की शुरुआत हमेशा की तरह सुबह ६.३० बजे शिविर स्थल पर सामूहिक ध्यान और योगासनों से हुई। शाम के सत्र में श्री शिवकृपानंद स्वामी जी ने दक्षिण भारत के विजयनगर राज्य की कथा सुना कर प्रवचन की शुरुआत की। रामू नामक भिखारी विजयनगर राज्य का कुशल राजा बना। राजगुरु से मंत्र लेकर, साधना कर भीख माँगने की अपनी आदत पर काबू पाया। स्वामी जी ने कहा कि यह कहानी साधकों पर लागू होती है। आत्मानुभूती प्राप्त कर वे राजा बन गये हैं। अतीत की यादों को बार–बार दोहराने की आदत को छोड़ कर अंतर्मुख होना चाहिए। पूर्व कर्मों की वजह से साधकों को आज आत्मसाक्षात्कार हुआ है; किंतु उन्हें इसका एहसास नहीं है। हररोज़ ध्यान करने से बीज रूप में स्थित शक्ति मूलाधार से सहस्त्रार तक जाती है और सभी नाडियाँ और चक्र शुद्ध हो जाते हैं। सभी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। इस प्रक्रिया में मनुष्य का अतीत सबसे बड़ा रोड़ा है। अतीत को भूलना मुमकिन नहीं है; केवल इसे समर्पित किया जा सकता है।

आज्ञा चक्र का संबंध चंद्र नाड़ी से है। अतीत के बारे में आप जितना सोचते हैं उतनी ही नाड़ी कमज़ोर हो जाती है और आपका आज्ञा चक्र दूषित हो जाता है। किसी को देख कर आपको गुस्सा आता है। इसका कारण उसका आभा मंडल ख़राब है और उसका प्रभाव आपके मन पर होता है। इसी तरह आपकी भी स्थिति ख़राब होगी, तो दूसरों पर इसका असर पड़ता है। इसके लिए आप ख़ुद स्वयम का अवलोकन करें। जितनी बुरी घटनाओं और व्यक्तियों को आप अपने आज्ञा चक्र में रखोगे, उतना आपका नुक़सान होगा। एक मठाधीश का उदाहरण देकर स्वामी जी ने कहा कि दुश्मनी यह जहर ही है; दुश्मन को माफ़ करके, अपने चित्त से हटा देना चाहिए। अतीत के विचारों को कम करने के लिए धरा पर बैठ कर ध्यान करो, पृथ्वी तत्व से सम्पर्क स्थापित करो तथा प्रार्थना करो।

सोमवार, दिनांक ३० अप्रैल २०१८ : आठवाँ दिन * सहस्त्रार चक्र –

समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर के आठवें और अंतिम दिन की शुरुआत हमेशा की तरह सुबह ६.३० बजे शिविर स्थल पर सामूहिक ध्यान तथा योगासनों से हुई। शाम ७ बजे प्रारम्भ में शिविरार्थियों ने शिविर के दरमियान उन्हें आये अनुभव कथन किये। स्वामी जी की सहधर्मचारिणी, गुरु माँ ने अपनी अनुभूतियाँ कथन कीं।

गुरु माँ ने कहा कि महा–शिविर की समाप्ति के बाद ४५ दिन ध्यान–साधना आवश्यक है; क्योंकि आध्यात्मिक बीज प्राप्त होने पर उसकी निगरानी रखनी होती है। किसी एक कुएँ में सालों साल जमा हुई गंदगी तथा कचरा निकालने पर कुएँ में नैसर्गिक जलस्त्रोत से शुद्ध पानी मिलता है, वैसे ही ध्यान–साधना करने पर धीरे–धीरे हम आत्माभिमुख होने लगते हैं। शुद्धिकरण की यह प्रक्रिया ध्यान–साधना के कारण चालू रहती है।

श्री शिवकृपानंद स्वामी जी ने प्रवचन की शुरुआत बुद्ध पूर्णिमा को ध्यान में रखते हुए भगवान् गौतम बुद्ध के जीवन काल की एक घटना उद्धृत कर की। क्या भगवान् है? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् गौतम बुद्ध ने तीन व्यक्तियों को तीन प्रकार से दिया। इस पर उनके शिष्य आनंद ने इसका कारण जानना चाहा, तब उन्होंने कहा कि जो नास्तिक था उसे बताया कि भगवान् है। जो आस्तिक था उसे अनुभूति नहीं थी, इसलिए उसे बताया कि परमेश्वर नहीं है। तीसरे जिज्ञासू व्यक्ति को उन्होंने कुछ नहीं बताया।... और वे ध्यानस्थ हो गये। उस व्यक्ति ने भी ध्यान किया और परमात्मा को अनुभूति से जाना। इसके कारण उसे काफ़ी समाधान मिला। सद्गुरु का जवाब उनके सामने जो व्यक्ति है उसकी स्थिति पर निर्भर करता है, स्वामी जी ने बताया। श्री साईं बाबा केवल उदी देकर ही लोगों की सभी प्रकार की भिन्न–भिन्न समस्याएँ दूर करते थे। आज विज्ञान की सहायता से श्रद्धा व अंधश्रद्धा को परिभाषित किया जा सकता है, परखा जा सकता है। पानी पर प्रवचन का प्रभाव की जाँच करने के लिए पानी के नमूनों का परीक्षण किया गया, तब पाया गया कि पानी के अणुओं में बहुत सूक्ष्म परिवर्तन हुए हैं। पानी के गुणों में परिवर्तन हुआ था। पानी के एक नमूने में स्वामी जी ने श्री साईं बाबा का ध्यान करने के पश्चात् उस पानी का परीक्षण करने पर पानी के स्फटिकों में साईं की प्रतिमा का निर्माण हुआ पाया गया। अपने शरीर में काफ़ी मात्रा में पानी होता है। हम जब अच्छी स्थिति में होते हैं, तब उसका अंदर के पानी के अंश पर परिणाम होता है। हमारा चित्त जिस पर होता है उसके स्पंदन पानी में जाते हैं और उस पानी के क्रिस्टल तैयार होते हैं। व्यक्ति के विचार, उसके चक्रों की स्थिति उसके स्पंदनों में से जान ली जा सकती है। वैसे ही आत्मसाक्षात्कार भी परखा जा सकता है। आभा मंडल में तुरंत परिवर्तन होता है।

स्वामी जी ने उनका जापान का अनुभव बताया। जापान में उनका शिविर चालू था। उस समय आने वाले बड़े तूफ़ान की सूचना दी जा रही थी। किंतु, स्वामी जी के आभा मंडल से एक बड़ा विद्युत चुंबकीय क्षेत्र तैयार हुआ और तूफ़ान लौट गया। यदि हम नियति से समरस होते हैं, तो नियति भी अपने ख़िलाफ़ नहीं जाती। अतः ध्यान करके अपने इर्दगिर्द एक १५–२० फ़ीट का आभा मंडल, आपका विश्व बनाइए। एक दिन यह सारा विश्व कल्याणकारी विश्व होगा। समर्पण ध्यान–संस्कार से इन्सानियत जागृत की जाती है। प्रत्येक मनुष्य में इन्सानियत जगाने का तथा उसको अच्छा इन्सान बनाने का महनीय कार्य साईं बाबा ने किया।

इसके पश्चात् संस्थान के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कदम ने श्री शिवकृपानंद स्वामी जी को सन्मान पत्र अर्पण किया। श्री कदम ने लगातार आठों दिन संस्थान की ओर से इस महा–शिविर में अपनी उपस्थिति दर्ज़ की। इस शिविर के दौरान समर्पण मेड़िकल रिसर्च कैम्प में श्री साईं बाबा अस्पताल और अहमदाबाद का मणीनगर अस्पताल की सहायता से ध्यान से मानव शरीर पर होने वाले परिणामों का संशोधन किया गया। इसके लिए कुछ

परीक्षण किये गये।

इस तरह समर्पण ध्यानयोग का यह आध्यात्मिक महा–शिविर सफलता से सम्पन्न हुआ, जिसका हज़ारों पुण्यात्माओं ने अपने सर्वांगीण विकास के लिए लाभ उठाया। इंटरनेट के माध्यम से ५३ देशों में स्थित साधकों ने सीधे प्रसारण का लाभ उठाया। यही इस महा–शिविर की सबसे बड़ी सफलता है।

समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर में शामिल ४० से ४५ हज़ार साधकों की बैठने की व्यवस्था करने के लिए ३ लाख २६ हज़ार चौरस फ़ीट जगह की व्यवस्था की गई थी। इस मैदान में ६० फ़ीट x २० फ़ीट तथा १० फ़ीट ऊँचा मंच बनाया गया था। इस मंच पर श्री साईं बाबा समाधि मंदिर तथा द्वारकामाई का दृश्य साकार किया गया था। महा–शिविर में बैठक व्यवस्था तथा पार्किंग व्यवस्था के लिए लगभग ३०० साधक और साधिकाओं को तैनात किया गया था। इसी प्रकार संस्थान की ओर से सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छता, प्रथमोपचार व्यवस्था की गई थी। साधकों के लिए स्वच्छ पीने के पानी के लिए मिनरल वॉटर की व्यवस्था की गई थी। इस शिविर में गुरु तत्व पर और श्री साईं बाबा के जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनियाँ आयोजित की गई थीं। इसी तरह समर्पण ध्यानयोग से संबंधित साहित्य के स्टॉल्स लगाये गये थे। इनमें ऑडियो और विडियो सी.डी.यों सहित किताबें विक्री के लिए रखी गई थीं।

इस समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर में सिंगापुर, मॉरिशस, यूएई, नेपाल, फिनलैंड, अमेरिका, पेरू, जर्मनी, स्वित्झर्लंड, कैनडा, इंग्लैंड, हाँगकाँग, कतार, जापान, ओमान, साऊथ अफ्रिका, ऑस्ट्रेलिया आदि २२ देशों से ४०० साधक सहभागी हो गये थे। भारत के महाराष्ट्र, गोवा, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, हिमाचल प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश और ओरिसा आदि १५ राज्यों से लगभग ३५ से ४० हज़ार साधक इसमें शामिल हो गये थे। २०१३ के बाद समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर ने यह विक्रम स्थापित किया। इन साधकों की साईं आश्रम भक्त निवास स्थान, जंगली महाराज आश्रम स्थित निवास स्थान में निवास की व्यवस्था की गई थी।

समर्पण ध्यानयोग महा–शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न होने के लिए योग प्रभा भारती (सेवा संस्था) ट्रस्ट, मुंबई के श्री उमेश पै, श्री गिरीश बोरकर, श्रीमती शर्मिला पाटिल, श्री प्रताप शहा, श्री सुरेश पटेल और श्री वैभव पारिख ने कड़ी मेहनत की। संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कदम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल और सभी विश्वस्तों के मार्गदर्शन में उप ज़िलाधिकारी श्री धनंजय निकम व श्री मनोज घोडे पाटिल, उप कार्यकारी अधिकारी डॉ. संदीप आहेर, पोलीस उप अधीक्षक श्री आनंद भोईटे, सभी प्रशासकीय अधिकारी व शताब्दी कक्ष सहित सभी विभागों के कर्मचारियों ने सराहनीय प्रयास किये।

मराठी से हिंदी अनुवाद

– अरुणा विकास नायक
सहायक महाप्रबंधक, रिज़र्व बैंक (सेवा निवृत्त)

❍❍❍

Shirdi News

Mohan Yadav
* Public Relations Officer *
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi
- Translated from Marathi into English by
Vishwarath Nayar
E-mail : vishwarathnayar@gmail.com

Shri Ram Navami Festival – 2018

The annual Shri Ram Navami festival was held by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi this year from Saturday, March 24, 2018 to Monday, March 26, 2018, in an air of piety amidst chants of *'Jai Shri Sai Ram'*.

The Ram Navami festival was started in Shirdi in 1911 with the permission of Shri Sai Baba. Since then this festival is celebrated every year in Shirdi with great enthusiasm. Sai devotees from all over the country and abroad come to Shirdi for this festival. Well planned arrangements were made to facilitate easy and convenient *Darshan* for the devotees during the festival. Cloth *mandaps* were erected in the temple premises to provide shade from the heat. Along with security guards, water and electricity facilities were also provided. Also, to ensure proper shelter facility, cloth *mandaps* with beddings were erected by the Sansthan at various places on the Mumbai – Shirdi route for pilgrims on foot *(padayatris)* accompanying the *palkhis* (palanquins). Water and electric supply were provided in the *mandaps*. Mobile medical squad was kept in service on the Sinnar – Shirdi route to ensure instant medical care to the *padayatris*. And, first aid centers were started at the temple premises, *Darshan* line, 500-rooms New Bhakta Niwas Sthan, Sai Ashram, Shri Sai Prasadalaya and other places. Similarly accommodation was arranged in the Sai Dharmashala for the *padayatris* after they reached Shirdi.

Kakad Aarati was done at 4.30 a.m, early morning on the first day of the festival on Saturday, March 24, 2018. After the *Kakad Aarati*, a grand procession of Shri Sai Baba's Photo, the holy *Grantha* Shri Sai Sat Charita and the *Veena* with the playing of musical instruments was taken out from the Shri Sai *Samadhi Mandir* to Dwarkamai. Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam with the *Veena*, Trustee Sri Bhausaheb Wakchaure and Deputy Collector Sri Manoj Ghode Patil with the Photo of Shri Sai Baba and the Trustee Advocate Mohan Jaykar with the holy *Grantha* participated in the procession. The Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal, Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam, employees, villagers and Sai devotees were present in large numbers on the occasion. After the procession

First Day, Saturday, March 24, 2018

reached Dwarkamai, the *Akhand* (non-stop) *Parayan* (reading) of the holy *Grantha* 'Shri Sai Sat Charita' commenced. Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam read the first chapter, Sou. Saraswati Wakchaure read the second, Adv. Mohan Jaykar read the third, Sai devotee Sri Abhay Dhadhiwal read the fourth and Smt. Chhayatai Dattatray Shelke read the fifth chapter. Shri Sai Baba's holy bath was done at 5.20. After that, at 6 a.m. the Sansthan's Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal along with her family performed the ritual worship of Shri Sai Baba's Feet *(Padya Pooja)*. At 12.30 noon, the Mid-day *Aarati* was done. After the *Aarati*, *Teertha Prasad* was distributed. At 4 p.m. melodious *kirtan* programme by *H.B.P. (Hari Bhakta Parayan)* Sri Vikram Nandedkar was held on the dais

Sai *Padya Pooja* by the Sansthan's Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal and Sri Prakher Agarwal with family members...

Philanthropic Sai devotee from Mumbai, Sri Jayantibhai...

beside the *Samadhi Mandir*. After the *Dhoop Aarati* at 6.30 p.m., Sri Nitin Mukesh presented a *bhajan sandhya* programme from 7 p.m. to 10 p.m. At 9.15 p.m., a procession of Shri Sai Baba's Palanquin was taken out through the Shirdi village. After the procession, *Shej Aarati* was done at 10.30 p.m.

Sri Sudhir Mungantiwar, Minister of Finance, Planning and Forests of Maharashtra State and Sri Ram Shinde, Guardian Minister availed the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* on the occasion of the Ram Navami festival. Philanthropic Sai devotee from Mumbai, Sri Jayantibhai donated a golden *Pancharati* weighing 1351 grammes and costing Rs. 39,01,688/- for performing the regular *Aarati* of Shri Sai Baba, which he presented to the Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal.

On Sunday, March 25, 2018, the main day of the festival, *Kakad Aarati* of Shri Sai Baba was done at 4.30 a.m. After the *Kakad Aarati*, the *Akhand Parayan* was completed. The procession with musical instruments of the Photo of Shri Sai Baba, Shri Sai Sat Charita *Grantha* and the *Veena* from Dwarkamai via *Gurusthan* was taken out. The Sansthan's Trustee Sri Bipindada Kolhe with the *Veena*, Trustees Adv. Mohan Jaykar and Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam with the Photo of Shri Sai Baba, Trustee and Chairperson of the Shirdi Nagar Panchayat Sou. Yogitatai

Main Day, Sunday, March 25, 2018

Sri Radhakrishna Vikhe Patil (Opposition Leader in the Maharashtra Legislative Assemly) and Sou. Shalinitai Vikhe Patil (Chairperson of the Ahmednagar District Council)...

Shelke with the holy *Grantha* participated in the procession. The Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal, Trustees Sri Pratap Bhosale and Dr. Manisha Kayande, Deputy Executive Officer Dr. Sandeep Aher, Sou. Saraswati Wakchaure, employees, villagers and Sai devotees were present in large numbers on the occasion. Shri Sai Baba's holy bath was done at 5.20 a.m. After that, the Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal performed the worship of the *Kavadi* (temple flag-post). At 6 a.m. the worship of the holy Feet of Shri Sai Baba was done by the Trustee Sri Pratap Bhosale along with his wife Sou. Ashwini Bhosale in the *Samadhi Mandir* and the worship of the sack of wheat in Dwarkamai was performed by the Trustees Adv. Mohan Jaykar and Sri Bipindada Kolhe and Trustee and Chairperson of the Shirdi Nagar Panchayat Sou. Yogitatai Shelke. Lakhs of devotees availed the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* as the temple was kept open for the *Darshan* throughout the night on the main day of the festival. Sri Radhakrishna Vikhe Patil, Opposition Leader in the Maharashtra Legislative Assembly and his wife Sou. Shalinitai Vikhe Patil, Chairperson of the Ahmednagar District Council, availed the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* on the occasion of the Ram Navami festival. *H.B.P.* Sri Vikram Nandedkar presented *kirtan* on the birth of Shri Ram at 10 a.m.

Prior to the Noon *Aarati*, the ritual worship of the new flags was done by the Rasane and Deshpande (Nimonkar) families and a procession was taken out at 4 p.m.

After that, at 5 p.m. the procession of Shri Sai Baba's Chariot was taken out through the Shirdi village. Sai devotees and villagers participated in this in large numbers. After the *Dhoop Aarati* of Shri Sai Baba at 6.30 p.m., Smt. Shraddha Desai, Swarashri Anand Pratishthan, Mumbai presented a song and group dance programme from 7 p.m. to 10 p.m. Being the main day of the festival, the *Samadhi Mandir* was kept open for the *Darshan* throughout the night.

Interested artistes presented their programmes in front of Shri Sai Baba on that day from 10 p.m. to the next day till 5 a.m.

On the occasion of Shri Ram Navami, philanthropic Sai devotee Sri Vinayak Gajanan Mokhare donated to the Sansthan 65 sacks of wheat, 21 sacks of rice, 10 sacks of sugar, 11 sacks of *channa dal* and 11 tins of groundnut

Sri Channa Reddy, philanthropic Sai devotee from Nellur...

Concluding Day,
Monday, March 26, 2018

oil and his associate Sri Namdev Kisanji Mahakalkar donated 1 sack of sugar, in all totalling Rs. 3,50,000/- worth of grocery.

Shri Sai Baba's holy bath was done on Monday, March 26, 2018, the concluding day of the festival, at 5.05 a.m. Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam along with his wife Sou. Priyatama Kadam performed the worship of the Feet of Shri Sai Baba in the *Samadhi Mandir* at 6 a.m. and Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam along with his wife did the *Rudra Abhishek* in the *Gurusthan* at 6.30 a.m. Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan and dignitaries performed the ritual worship of the Shri Sai Baba *Samadhi* Centenary Pillar in the *Lendi Baug* and changed the Flag at 8.30 a.m. Also, Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sou. Nalini Haware, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Sou. Priyatama Kadam, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sou. Yogitatai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Nagar Panchayat, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Dr. Sandeep Aher, Deputy Executive Officer released the special Ram Navami issue of the bi-monthly periodical 'Saileela' (Marathi) published by the Sansthan to mark the Centenary Year of Shri Sai Baba's *Samadhi*.

The *Dahi Handi* (breaking the pot) programme was held at 12 noon after the

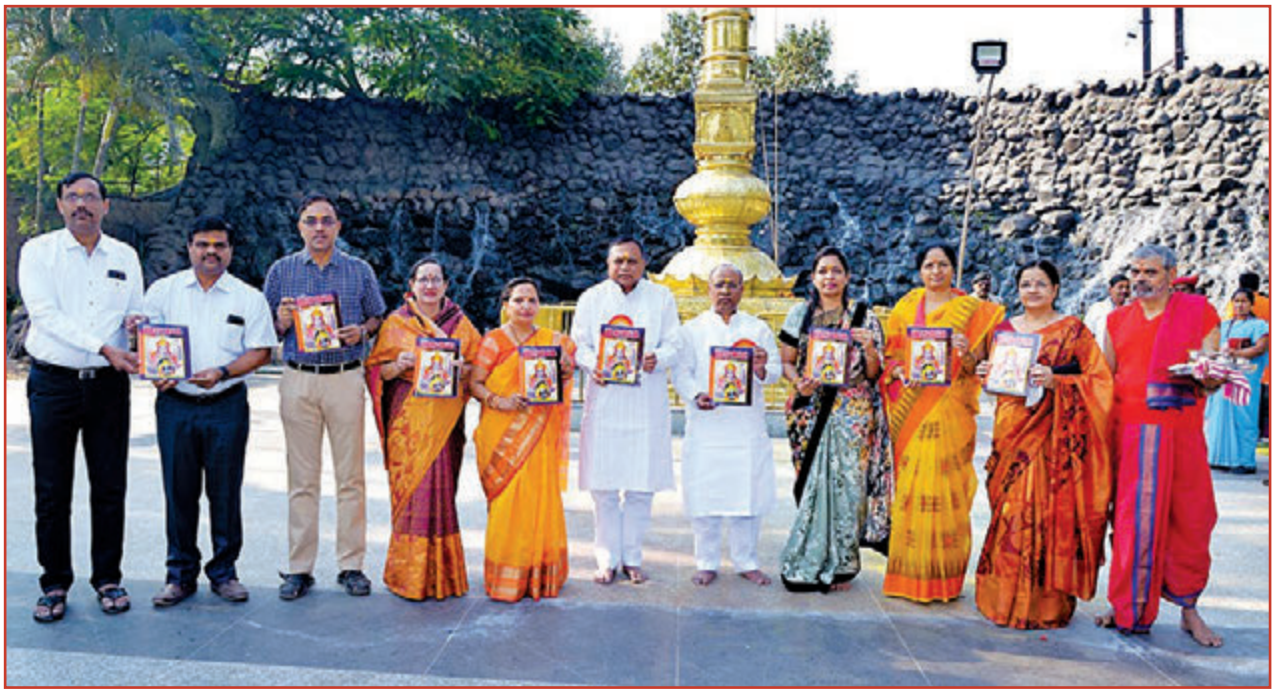

kala kirtan presented by *H.B.P.* Sri Vikram Nandedkar. The Mid-day *Aarati* was done at 12.10 p.m.

Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware along with his wife Sou. Nalini Haware performed the worship of the Feet of Shri Sai Baba in the *Samadhi Mandir* at 6 p.m.

After the *Dhoop Aarati* at 6.30 p.m., Sri Shirdhar Phadke presented the Geet Ramayan programme from 7 p.m. to 10 p.m. The *Shej Aarati* of Shri Sai Baba was done at 10.30 p.m.

Sri Deepak Kesarkar, Minister of State for Finance, Planning and Rural Development of Maharashtra State, availed the *Darshan* of the *Samadhi* of Shri Sai Baba on the occasion of the Shri Ram Navami festival. The office bearers of

Sai *Padya Pooja* by the Sansthan's Vice Chairman Sri Chandrashekhar Kadam and Sou. Priyatama Kadam...

Champions of the wrestling competitions held in the festival...

Dwarkamai Mandal, that has been doing electric lighting in the Shri Sai *Samadhi Mandir* and its premises and erecting various displays on Shri Ram Navami and Shri Sai *Punyatithi* festivals since the last 40 years, were felicitated on behalf of the Sansthan by Sri Dhananjay Kadam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Dr. Sandeep Aher, Deputy Executive Officer, Sri Babasaheb Ghorpade, Chief Accounts Officer and Administrative Officer and Sri Suryabhan Game and Sri Uttamrao Gondkar, Administrative Officers. Sri Channa Reddy, philanthropic Sai devotee from Nellur, handed over the golden *Padukas*, weighing 1133 grammes costing Rs. 32,30,000/-, as a donation for the *Gurusthan*, to the Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware and Sou. Nalini Haware.

The attractive floral decorations in the *Samadhi Mandir* and its premises for the Shri Ram Navami festival from the donation made by the philanthropic Sai devotee from Delhi, Smt. Sneha Sharma drew the attention of all Sai devotees; and the main gateway erected with the display of Shri Shankar Bhagwan and Shri Sai Baba on it and the electric lighting of the temple and its premises became the main attraction of the festival.

Free tasty meal was served to Sai devotees during the 3-days of Ram Navami festival in the Shri Sai Prasadalaya from the donations made by the philanthropic Sai devotees – Vishvendra Surendra Saeed (Secunderabad), Rajroop Raghavan Vimireddy Saichandan (Kadappa), Rajgopal Natrajan (Chennai), Yogi Sevakarma, Shirdi Sai Trust (Pattipulam), Ajit Kumar (Chennai), V. V. Raghavan, Sunil Agarwal (Mumbai), Vrinda Sundaram (Delhi), Ramchand Gulabani (Ajmer) and Devanshu Shveta Annareddy and family (Karnool).

Deputy Collectors of the Sansthan Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Superintendent of Police Sri Anand Bhoite, Deputy Executive Officer Dr. Sandeep Aher, all administrative officers, all head of departments and employees under the guidance of the Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware, Vice Chairman Sri Chandrashekhar Kadam, all Trustees and Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal took special efforts for the successful conduct of the Shri Ram Navami festival.

❍❍❍

Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi informed that the Sansthan received Rs. 4.33 crores donation during the Shri Ram Navami festival organised by the Sansthan from Saturday, March 24, 2018 to Monday, March 26, 2018.

This included Rs. 1,98,96,297/- in the donation boxes, Rs. 71,64,292/- on the donation counters, Rs. 21,31,382/- through debit and credit cards, Rs. 19,85,155/- through online, Rs. 23,14,875/- through cheques and demand drafts, Rs. 3,76,428/- through money orders, 577.800 grammes gold, 3059 grammes silver and about Rs. 6,30,746/- in foreign currencies of 18 countries. Besides, Sri Jayantibhai, philanthropic Sai devotee from Mumbai donated a golden *Pancharati* vessel weighing 1351 grammes worth Rs. 39,01,688/- and Sri Chirala Channa Reddy, philanthropic Sai devotee from Nellur donated golden *Padukas* weighing 1133 grammes worth Rs. 32,30,000/-.

1,93,597 Sai devotees availed the *Darshan* of Shri Sai Baba and 1,93,784 Sai devotees availed the *Prasad* meal in the Shri Sai Prasadalaya during the festival period. 2,21,600 *bundi ladoo* packets were distributed to Sai devotees in the *Darshan* line. Also, 59,855 Sai devotees availed the stay at the Sansthan's *Niwas Sthans*.

Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Dr. Sandeep Aher, Deputy Executive Officer and Sri Babasaheb Ghorpade, Chief Accounts Officer and Administrative Officer of the Sansthan graced the occasion.

❍❍❍

***Bhoomi Poojan* of the works of third floor of Sansthan's Sai Nath Hopital at the hands of the Sansthan's Chairman Dr. Suresh Haware. Vice Chairman Sri Chandrashekhar Kadam, Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal, Deputy Collectors Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Chief Accounts Officer and Administrative Officer Sri Babasaheb Ghorpade, Executive Engineer Sri Ravindra Ghule, Medical Director Dr. Pradip Mumbarkar, Deputy Medical Director Dr. Vijay Narode and Medical Superintendent Dr. Maithili Pitambare were present on this occasion.**

Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, stating that the task of serving patients started by Shri Sai Baba was accomplished through the free plastic surgery camp organized jointly by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, Give Me Foundation and Association of Plastic Surgeons on the occasion of the Centenary Year of Shri Sai Baba's *Samadhi*, assured that the Sansthan would duly co-operate in this camp in future.

He was addressing as Chairman of the concluding function of the 3-days camp. Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee, Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collector, Sri Suresh Wabale, former Trustee, Dr. Vijay Narode, Deputy Medical Director, Dr. Maithili Pitambare, Medical Superintendent, Dr. Ram Chilgar, Plastic Surgeon from Aurangabad, Sri Sarang Deshmukh, specialist doctors from abroad, Sansthan's medical officers, employees, patients and their relatives were present on the occasion.

Surgeries, to make life comfortable, were done at this camp. About 100 patients registered their participation in the camp. Surgeries were performed successfully on 77 of these patients. Surgeries on the balance 23 patients will be done in the presence of Dr. Chilgar. In the leadership of Dr. Hyung Chi from Taiwan, plastic surgeons from Taiwan, Singapore, Thailand, Italy, Philipines and Peru and from Kerala, Mumbai and Aurangabad in India performed these surgeries, for difficult and complex disorders, like elephantiasis, stuck neck, fingers and hands at birth or due to burns, free of cost at the Shri Sai Nath Hospital.

Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan and Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee, addressed the gathering on the occasion.

Specialist doctors from India and abroad, medical officers and employees were felicitated on behalf of the Sansthan for their invaluable contribution at the camp. Dr. Maithili Pitambare, Medical Superintendent gave the introductory address and Prof. Sri Vikas Shivgaje anchored the programme. Dr. Rajani Sabale delivered the vote of thanks.

❍❍❍

Cine actress Shilpa Shetty...

Artistes of the Marathi film 'Baban', Bhausaheb Shinde, Gayatri Jadhav, Indrabhan Kare and Rahul Niravane...

Chief Minister of Telangana State Sri K. Chandrashekhar Rao, with his wife; flanked by the Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam and Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam...

Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam and Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam felicitated the Chief Minister of Telangana State Sri K. Chandrashekhar Rao and his wife after the *Darshan*...

Sri Chandrashekhar Bavankule, Energy Minister of Maharashtra State, announced the sanction of the 10 M. W. A. C. capacity grid connected Solar Energy project for Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. He made this announcement when he came to Shirdi with his wife for the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*. He handed over the sanction letter of the Maharashtra Energy Development Agency (MEDA) to the Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal. Legislator Sou. Snehalatatai Kolhe, Chief Engineer Sri Deepak Kumthekar, Superintendent Engineer Sri Anil Borse, Superintendent Engineer Sri Bhujang

Khandare, Deputy Collector of the Sansthan Sri Manoj Ghode Patil, Head of the Electric department Sri Vijay Rohmare were present on the occasion.

Giving information about this in detail, Sri Bavankule stated that the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi had submitted the proposal for the proposed 10 M. W. A. C. capacity grid connected Solar Energy project to MEDA. Having been given the technical sanction by MEDA for this on April 25, 2018, he stated that the government will give all assistance to the Sansthan for getting the administrative approval and immediately calling for tenders and completing the Solar Energy project in six months. The energy burden on the Sansthan will be completely reduced after the completion of this project. Sri Bavankule, therefore, congratulated the Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware, Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal and all Trustees for the Sansthan's participation in the national programme of saving electricity of the State and generating Solar Energy, in keeping with the national policy of priority for the generation of non-conventional energy adopted by the Prime Minister Sri Narendra Modi and the Chief Minister Sri Devendra Fadnavis.

Industrialist Smt. Nita Ambani with the Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal, Trustee Sri Bhausaheb Wakchaure, Legislator Sou. Snehalatatai Kolhe and Sri Prakher Agarwal...

Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal felicitated Industrialist Smt. Nita Ambani after the *Darshan* in the presence of the Trustee Sri Bhausaheb Wakchaure, Legislator Sou. Snehalatatai Kolhe and Sri Prakher Agarwal...

May 1, 2018 : Chief Executive Officer of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, Smt. Rubal Agarwal hoisted the flag on behalf of the Sansthan, on the occasion of **Maharashtra Day** and **International Labour Day**.

Sansthan's Trustee Sri Bhausaheb Wakchaure, Deputy Collectors Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Executive Officer Dr. Sandeep Aher, Deputy

Dr. Maithili Pitambare...

Sri Anil Shinde...

Sri Sunil Tambe...

Sri Ashwin Ghule...

Superintendent of Police Sri Anand Bhoite, Administrative Officers Sri Uttam Gondkar, Sri Dilip Ugale and Sri Ashok Auti graced the occasion.

The following 30 employees of the Sansthan were felicitated as 'Ideal Employee' on the occasion of Labour Day - Dr. Maithili Pitambare, Medical Superintendent of Shri Sai Baba Hospital, Dr. Vijay Bakliwal, Medical Officer of Shri Sai Nath Hospital, Sri Anil Shinde, IT Chief of Information Technology department, Sri Sunil Tambe, typist clerk of General Administration, Sri Sudam Jamdhade, typist clerk of Labour department, Sri Dattatray Gavhale, assistant of Shri Sai Ashram Bhakta Niwas, Sri Bhairavnath Bankar, welder of Mechanical department, Sri Ashwin Ghule, assistant of CCTV control cell, Sri Dnyaneshwar Chikhale, instructor of Industrial Training Institute, Smt. Nirmala Pathare, staff nurse of Shri Sai Nath Hospital, Sri Vishwanath Patil, guard of Security department, Smt. Indubai Mandalik, contract employee of Security department, Sri Vikas Bodhak, contract employee of Security department, Sri Malhari Jejurkar, contract employee of Security department, Sri Yogesh Kate, contract employee of Security department, Sri Ghanshyam Mishra, assistant of Electric department, Sri Johny Makasare, assistant of Backward Class cell, Sri Bhausaheb Kote, assistant of Canteen department, Smt. Sumitra Bhadange, assistant of Garden department, Sri Dattatray Devkar, skilled contract employee of Health department, Smt. Ujwala Bhalke, unskilled contract employee of Health department, Sri Bapusaheb Shinde, senior clerk of Shri Sai Prasadalaya, Sri Nandu Ghodekar, assistant of Construction department, Sri Subhash Kalekar, assistant of Fire and Safety department, Sri Sambhaji Dhanavate, assistant of Shri Sai Prasad Niwas Sthan, Sri Navnath Gadakh, driver of Transport department, Sri Navnath Dange, skilled contract driver of Transport department, Sri Prashant Devare, medicine dispenser of Shri Sai Baba Hospital, Sou. Alice Avare, nurse of Shri Sai Baba Hospital and Sri Prakash Shinde, assistant of Accounts department.

Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan and Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee spoke on the occasion. Employees and head of all departments of the Sansthan were present in large numbers for this programme. Sri Vasant Vani, teacher of the Sansthan's Shri Sai Baba Kanya Vidya Mandir anchored the programme.

❍❍❍

Dr. Suresh Haware, Chairman of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, inaugurated the new Cathlab machine, costing about Rs. 5 crores, at the Sansthan's Shri Sai Baba Hospital.

Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam, Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal, Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat Sou. Yogitatai Shelke, Sou. Nalini Haware, Deputy Collectors Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Chief Accounts Officer Sri Babasaheb Ghorpade, Medical Director Dr. Vijay Narode, Medical Superintendent Sou. Maithili Pitambare, Dr. Pritam Vadgave, Dr. Manohar Shinde, Administrative Officer

Sri Suryabhan Game and Sri Yogesh Malpani of Shimadzu company were present on the occasion.

Speaking on the occasion, Dr. Haware stated, "Shree Saibaba Sansthan runs two hospitals, Shri Sai Baba Super Speciality Hospital and Shri Sai Nath Hospital. Surgeries for heart, bone, brain and spinal chord ailments are done at the Shri Sai Baba Super Speciality Hospital. Surgeries are done free of cost under the Mahatma Phule *Jeevandayi Yojana* for the yellow and saffron coloured ration card holders. In this hospital medicines are given along with blessings. This hospital has earned the distinction of conducting a record highest number of cardiac surgeries in the last 5 years under the Mahatma Phule *Jeevandayi Yojana* in the State. The over 15 years old Cathlab machine in use in this hospital has been replaced with the ultra modern machine of Shimadzu company of Japan costing Rs. 5 crores. This machine has a guarantee of 10 years and service warranty of 5 years. This machine has been tested too by conducting 250 surgeries. With an ultra modern MRI and CT Scan machines to be purchased for this hospital of the Sansthan, about 250 various equipments will be replaced soon." Therefore, along with specialist doctors, this hospital will be equipped with state-of-the-art machines, stating so Dr. Haware called upon more and more patients in the State to avail the benefit of the Sansthan's hospital.

❍❍❍

Sri Anant Gite, Union Minister for Heavy Industries and Public Works, Government of India with Sri Sadashiv Lokhande, Member of Parliament from Shirdi...

– – –

The Sai *sevak* scheme started from July 29, 2017 by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi on the occasion of the Shri Sai Baba *Samadhi* Centenary *Mahotsav* (Mega Festival), having evoked very good response, Sai devotees from various states in the country have participated in the scheme.

This scheme conceived by Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, was started on the occasion of the Shri Sai Baba *Samadhi* Centenary *Mahotsav*, to enhance the sense of service in the Shri Sai Baba temple and to treat devotees with a service oriented behaviour.

In this Sai *sevak* scheme, groups of 21 Sai *sevaks* being formed, each group works from Tuesday to Monday. These Sai *sevaks* render week-long service from 6 a.m. to 2 p.m. and 2 p.m. to 10 p.m. daily in a week.

520 Sai *sevak* groups from Maharashtra, Gujarat, Goa, Andhra Pradesh, Telangana, Karnataka, West Bengal, Delhi, Orissa, Tamil Nadu, Madhya Pradesh, Kerala and Uttarakhand having registered in this scheme, 7261 Sai devotees through 363 Sai *sevak* groups have rendered service under the Sai *sevak* scheme till date.

These Sai *sevaks* are given the opportunity to do Sai *seva* for 7 days at a stretch in a year in the temple premises, security department, Shri Sai Prasadalaya, *ladoo* department and the *Niwas Sthans*.

These Sai *sevaks* uttering 'Om Sai Ram' resolve issues of Sai devotees with reverence and an attitude of service.

These Sai *sevaks* are provided identity card and uniform and their stay in the Sansthan, meal, breakfast and tea arrangements are made free of cost.

The *seva* providers coming every

Tuesday are greeted and those who complete their *seva* are felicitated with a certificate on behalf of the Sansthan. Also, the Sai *sevaks* participating in this programme are administered the oath of cleanliness and abstinence from addictions.

The Shree Saibaba Sansthan appeals to those desirous of participating in this Sai *sevak* scheme to contact the Sansthan's labour department on telephone number (02423)258810/11.

❍❍❍

Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, felicitated 21 employees of the Sansthan who completed 60 years of age and retired in May 2018.

Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam, Chief Accounts Officer Sri Babasaheb Ghorpade, Administrative Officers Sri Suryabhan Game, Sri Dilip Ugale and Sri Ashok Auti, Medical Director of Shri Sai Baba Hospital Dr. Vijay Narode and head of various departments graced the farewell function.

The retired employees included Sri Uttam Gondkar, Administrative Officer of the Sansthan, Dr. Ashok Nyayadheesh, Pathologist of Shri Sai Baba Hospital, Sri Anant Lad, senior clerk of Shri Sai Baba Bhakta Niwas Sthan, Sri Eknath Shinde, typist clerk of Shri Sai Baba Hospital, Sri Ashok Kale of Mechanical department, Sri Baban Thore, assistant of Prasadalaya, Sri Eknath Arane of Sai Prasad Niwas Sthan, Sri Sarangdhar Vani of Accounts departmant, Sri Baban Shirsath of English Medium School and Sri Kabhu Bankar of Garden department.

Responding to the felicitation, Sri Uttam Gondkar stated, "With the feeling that this Shree Saibaba Sansthan is our family, keeping the Sai devotees in the center of all considerations, all employees should work with an attitude of service. He also thanked the Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal for approving the payment of *Deepavali* ex-gratia for the period 2012 to 2015 to retired and deceased employees.

Smt. Agarwal, in her address, stated that

these retired employees rendered excellent service in the execution of their duties for several years. Retiring in the Sai *Samadhi* Centenary Year, Smt. Agarwal expressed her best wishes to them.

Prof. Vikas Shivgaje anchored the programme.

❍❍❍

Dr. Suresh Haware, Chairman of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, inaugurated the Tensile Fabric Shed erected at a cost of Rs. 1.3 crores in the Sansthan's Sai Ashram

Bhakta Niwas and the Rs. 4.83 crores internal painting and repair works of the Sai Ashram Bhakta Niwas building.

Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam, Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal, Trustee Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee and Chairperson of the Shirdi Nagar Panchayat Sou. Yogitatai Shelke, Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam, Administrative Officers Sri Suryabhan Game and Sri Dilip Ugale, Executive Engineer Sri Ravindra Ghule, Deputy Executive Engineer Sri Raghunath Aher and employees were present on the occasion.

The Sansthan's Managing Committee took the decision to undertake the work of internal painting and repair works of the Sai Ashram Bhakta Niwas building and the erection of the Tensile Fabric Shed for the Shri Sai Baba *Samadhi* Centenary Year. Accordingly the Rs. 4.83 crores painting and repair works having been awarded to Admirecon Infrastructure Pvt. Ltd., Mumbai, this work will be completed in the coming 8 months. Also, the about 2000 people capacity, 19,500 sq. ft. Tensile Fabric Shed having been erected at a cost of Rs. 1.3 crores, this shed will serve to provide various amenities for the use of the Sai devotees.

The worship of the Bolero class Mahindra Company vehicle, 3 cargo carriers and 2 cars of Innova class vehicle of Toyota Company was performed by the Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware and the dignitaries on the occasion.

❍❍❍

Dr. Suresh Haware, Chairman of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, inaugurated the 7-days free Ear, Nose and Throat surgery and hearing aid distribution camp, jointly organised by the Sansthan and Bhagwan Mahavir Viklang Sahayta Samiti, Jaipur, from June 2, 2018 to June 8, 2018 to mark the Shri Sai Baba *Samadhi* Centenary Year.

Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee, Sou. Yogitatai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Nagar Panchayat, Sou. Nalini Haware, Sri Dhananjay Nikam, Deputy Collector, Dr. Vijay Narode, Deputy Medical Director, Dr. Ketan Shukla, medical officers of the Sansthan, employees, patients and their relatives were present at the programme, presided by Dr. Haware, Chairman of the Sansthan.

Dr. Haware stated on the occasion, "This camp commenced after the Mega Blood Donation camp organised for the Shri Sai Baba *Samadhi* Centenary Year. Patients need the medicine of doctors to get well. But, here patients receive blessings along with medicines. This is the speciality of this

hospital. The percentage of patients getting well in the Sansthan's hospital is 90. A meeting of patients and their kin was held a few days back. They expressed satisfaction at the facilities provided by both the hospitals of the Sansthan. The Sansthan is striving to make both the hospitals ultra modern.

Having made treatment in the Sansthan's Shri Sai Nath Hospital free, surgeries are done free of cost for yellow and saffron ration card holders under the Mahatma Phule *Jeevandayi Yojana* in the Shri Sai Baba Hospital. For others too surgeries are done at minimum cost. Over 12 lakh patients have availed medical service till date at both the hospitals.

Today the whole nation is witnessing abuse in healthcare. Expenses for unnecessary medicines and unnecessary investigations are uncalled for and huge. This expense is therefore unaffordable for common people. Keeping this in mind, the Shree Saibaba Sansthan has decided to provide free medical service to the poor, deprived, afflicted, denied patients and with the same objective these camps are being organized." Stating that these camps started in the Shri Sai Baba *Samadhi* Centenary Year will continue to be held every year in future too, he thanked all medical officers and employees for organizing this camp.

Medical Superintendent Dr. Maithili Pitambare, in her introductory address stated that 450 patients registered their names in this camp. Difficult and complex ear, nose and throat surgeries will be performed on 75 of these patients. These will be done free of cost in the Shri Sai Nath Hospital. Similarly hearing aids will be distributed free of cost to 300 patients as per their need by Dr. Narayan Vyas of Bhagwan Mahavir Viklang Sahayta Samiti, Jaipur."

Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan and Sri Bhausaheb Wakchaure, Trustee addressed the gathering on the occasion. Specialist doctors, medical officers and employees who offered great service in the camp were felicitated on behalf of the Sansthan. Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan and dignitaries handed over the hearing aids to the first 5 patients.

Dr. Gajanan Kashid, Dr. Dhananjay Kulkarni, Dr. Smita Naigaonkar, Dr. Ravindra Kulkarni, Dr. Jaya Kochur, Dr. Manisha Shirsath, Dr. Govind Kalate, Dr. Mahendra Tambe, Dr. Shobhana Kolhe, Dr. Amol Joshi, Dr. Narayan Vyas, Dr. Porval, Dr. Kesarkar and Dr. Madhura Joshi made special efforts for the camp.

Sri Pradeep Tribhuvan of the hospital anchored the programme and delivered the vote of thanks.

❍❍❍

The devout responded by being present in large numbers at the discourse on 'Ram *Katha*' by *H.B.P. (Hari Bhakta Parayan)* Sri Ramraoji Maharaj Dhok from Nagpur organised by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, for the Shri Sai Baba *Samadhi* Centenary *Mahotsav* at the Shri Sai Ashram centenary mandap erected at the Sai Ashram Bhakta Niwas Sthan from Wednesday, June 6, 2018 to June 12, 2018 from 7.30 p.m. to 10 p.m.

The programme commenced with lighting of the traditional lamp. Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Sri Bipindada Kolhe, Trustee, Dr. Sandeep Aher, Deputy Executive Officer, Sri Suryabhan Game and Sri Dilip Ugale, Administrative Officers were present on the occasion.

The discourse on 'Ram *Katha*' by *H.B.P.* Sri Ramraoji Maharaj Dhok commenced after the inaugural function. He was accompanied in vocal by *H.B.P.* Sri Niloba Suryavanshi Maharaj, Sri Ravindra Jagdale Maharaj and Sri Kashinath Patil Maharaj and on *tabla* by Sri Ashwinikumar.

❍❍❍

छोड़ शरीर चला जाऊँगा।
भक्त हेतु दौड़ा आऊँगा।।...
मनौती तुम्हारी पूरी करेगी मेरी समाधि।
रखो मुझमें दृढ़ तुम्हारी बुद्धि।।...
नित्य मैं जीवित, जानो यही सत्य।
नित्य प्रतीति से करना यह अनुभव।।...

शिर्डी मुझे बुला लो...

बेचैन दिल है साईं, शिर्डी मुझे बुला लो;
फैलाके अपनी बाहें, मुझको गले लगा लो।...

अब तक मैं आ ना पाया, उलझा रहा जीवन में;
डूबा रहा मैं फिर भी, साईं तेरी लगन में;
मुझको जो ग़म मिले हैं, उन ग़मों को मार डालो।...

देखा है मैंने साईं, शिर्डी सफ़र का जादू;
भर देगा खाली झोली, तेरी नज़र का जादू;
तपता हूँ दर्दों-ग़मों में, आँचल में तुम छुपा लो।...

आँसू भरी नज़र से, मैं तुमको देखता हूँ;
कुछ भी नहीं मैं तुमसे, बस तुमको माँगता हूँ;
नकली जगत् के बंधन, सब आज तोड़ डालो।...

मुझको यक़ीं है, रहमत तेरी मुझे मिलेगी;
पतझड़ में हसरतों की, कलियाँ नई खिलेंगी;
संदेह मन के सारे, बाबा तुम ही निकालो।...

मेरे साईं!

संसार के सभी सुख, नश्वर हैं मेरे साईं;
तेरा दिया हुआ ही, बेहतर है मेरे साईं।...

चाहे कहीं भी रहो तुम, जो चाहे सो करो तुम;
तेरी नज़र हमेशा, सब पर है मेरे साईं।...

करुणा सागर हैं आँखें, हँसता हुआ है चेहरा;
सबसे निराले-न्यारे, सुंदर हैं मेरे साईं।...

चातक समान देखूँ, बाबा की ओर क़ायम;
एक बूँद की तलब है, सागर हैं मेरे साईं।...

अब चल पड़े हैं हम तो, साईं का नाम लेके;
भटकाये कौन हमको, रहबर हैं मेरे साईं।...

साईं का नाम जप लो, साईं का ध्यान धर लो;
संसार के नियंता, ईश्वर हैं मेरे साईं।...

– विनय घासवाला
१०/३०२, लाभ रेसिडन्सी,
अटलदरा, वडोदरा – ३९० ०१२, गुजरात.
संचार ध्वनि : (०) ९९९८९९०५६४

❍❍❍

श्री रामनवमी उत्सव - २०१८
उत्सव की कुछ ख़ास झलकियाँ

श्री रामनवमी उत्सव के मुख्य दिन द्वारकामाई में गेहूँ की गोनी के पूजन के बाद संस्थान के विश्वस्त ॲड. मोहन जयकर, श्री बिपीनदादा कोल्हे व विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा सौ. योगिताताई शेलके...

श्री रामनवमी उत्सव के उपलक्ष्य में दाता साईं भक्त श्रीमती स्नेहा शर्मा के दान से समाधि मंदिर और परिसर में की गई आकर्षक फूलों की सजावट...

श्री रामनवमी उत्सव के समापन दिन समाधि मंदिर में काला कीर्तन के बाद दही-हंडी कार्यक्रम...

उत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित कुश्तियों की प्रतियोगिता में महिलाएँ भी शामिल थीं।

श्री रामनवमी उत्सव के समापन दिन समाधि मंदिर में संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे व उनकी सुविद्य पत्नी सौ. नलिनी हावरे के हाथों श्री साईं बाबा की विधिवत् पाद्यपूजा...

RNI Regd. No. MAH /BIL/2000/8048 SHRI SAI LEELA Date : 15th June 2018

गणमान्य व्यक्तियों की शिर्डी भेंट...

श्री पीयूष गोयल, केंद्रीय मंत्री, रेल व कोयला, भारत सरकार ने श्री साईं बाबा की समाधि के दर्शन किये। इस समय संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त भाऊसाहेब वाक्चौरे व विधायक श्रीमती स्नेहलताताई कोल्हे आदि उपस्थित थे।

दर्शनोपरांत **श्री पीयूष गोयल,** केंद्रीय मंत्री, रेल व कोयला, भारत सरकार का संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त भाऊसाहेब वाक्चौरे के हाथों सत्कार किया गया।

महाराष्ट्र के वित्त व नियोजन, वन मंत्री **श्री सुधीर मुनगंटीवार** और पालक मंत्री **प्रा. राम शिंदे** ने श्री साईं बाबा की समाधि के दर्शन किये। इस समय संस्थान के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कदम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त भाऊसाहेब वाक्चौरे आदि उपस्थित थे।

दर्शनोपरांत महाराष्ट्र के वित्त व नियोजन, वन मंत्री **श्री सुधीर मुनगंटीवार** और पालक मंत्री **प्रा. राम शिंदे** का संस्थान के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कदम व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल के हाथों सत्कार किया गया।

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी के लिए संस्थान के कार्यकारी अधिकारी द्वारा मे. टैको व्हिजन्स प्रा. लि., १०५ ए, बी, सी, गवर्नमेंट इन्डस्ट्रियल इस्टेट, चारकोप, कांदिवली (प.), मुम्बई - ४०० ०६७ में मुद्रित और साईं निकेतन, ८०४ बी, डा. आम्बेड़कर रोड, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। * सम्पादक : कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी * कार्यकारी सम्पादक : विद्याधर ताठे